Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 6 30 जून, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

भारत में बेरोजगारी का संकट

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

देश में युवाओं के लिये बेरोजगारी की समस्या लाइलाज बीमारी की तरह बढती जा रही है। हाल ही के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 15–29 वर्ष के युवाओं के बीच बेरोजगारी दर चिंताजनक रूप से दोहरे अंकों में बनी हुई है गत वर्ष के जुलाई–सितम्बर के तिमाही डेटा के अनुसार राष्ट्र के 5.2 प्रतिशत राष्ट्रीय औसत के मुकाबले केवल हरियाणा के 6.2 प्रतिशत युवा बेरोजगार है। शिक्षा, कृषि आदि हर क्षेत्र में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

लगातार बढ़ रही बेरोजगारी के कारण लाखों युवा प्रतिवर्ष देश छोड़कर गैर कानूनी (डंकी रूट) तरीके से रोजगार के लिये जमीन–जायदाद बेचकर यूरोपियन देशों में जा रहे है। हरियाणा, पंजाब और गुजरात जैसे राज्यों के युवा अपनी जमीन बेचकर या भारी कर्ज लेकर एजेंटों को 20 से 50 लाख रुपये तक देते हैं। गत वर्ष से अब तक केवल पंजाब व हरियाणा में 400 से अधिक युवाओं को गैर कानूनी तरीके से यू.एस.ए. में बार्डर पार करने पर डिपोर्ट किया जा चुका है। पेपर लीक से लेकर "डंकी रूट" की जानलेवा मजबूरी से युवा पीढ़ी रोजगार के भीषण संकट से जूझ रही है। भारतीय विदेश मंत्रालय के अनुसार, साल 2009 से लेकर अब तक 15,756 से अधिक अवैध भारतीय प्रवासियों को अमेरिका से वापस भारत डिपोर्ट किया जा चुका है, भारत सरकार ने संसद में जानकारी दी कि केवल साल 2025 में ही 3,800 से अधिक भारतीय नागरिकों को अमेरिका से वापस भेजा गया है। यूएस कस्टम तथा बार्डर सुरक्षाके डेटा के मुताबिक, अमेरिकी सीमाओं पर अवैध रूप से घुसने की कोशिश में पकड़े गए भारतीयों की संख्या में भारी उछाल आया है। साल 2020 में यह संख्या 19,883 थी, जो साल 2023 में बढ़कर 96,917 और साल 2024 में 90,415 तक पहुंच गई। Pew Research Centerके एक अनुमान के मुताबिक, अमेरिका में बिना वैध दस्तावेजों के रहने वाले भारतीयों की संख्या 7 लाख (7,25,000) से अधिक है, जो मैक्सिको और होंडुरास के बाद तीसरी सबसे बड़ी संख्या है।

डंकी रूट का एक सबसे बड़ा खुलासा फ्रांस में हुआ था, जहां मानव तस्करी (Human Trafficking) के संदेह में भारतीय यात्रियों से भरे एक पूरे विमान को रोककर उन्हें बचाया गया था, दिसंबर 2023 में निकारागुआ (Nicaragua) जा रही एक चार्टर फ्लाइट को फ्रांस के वैट्री (Vatry) एयरपोर्ट पर फ्रांसीसी अधिकारियों ने रोका था। इस विमान में 303 भारतीय यात्री सवार थे, जो डंकी रूट के जरिए सेंट्रल अमेरिका होते हुए अमेरिका या कनाडा में अवैध प्रवेश की फिराक में थे।

सरकार के ही आंकडे बताते हैं कि देश में हर छठा ग्रेजेएट बेरोजगार है और चंडीगढ़ जैसे शिक्षित केंद्रीय शासित प्रदेश में ही हर दसवां स्नातक बेरोजगार है।सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी की रिपोर्ट के अनुसार देश में बेरोजगारी का आंकड़ा 7.4 प्रतिशत और सितंबर–दिसंबर 2021 के आंकड़ों के मुताबिक दूसरे राज्यों के मुकाबले हरियाणा में बेरोजगारों की संख्या सबसे ज्यादा है। 28.6 प्रतिशत बेरोजगारी दर के साथ हमारा खुशहाल प्रदेश हरियाणा इस सूची में पहले पायदान पर है।2025 में (पी.एल.एफ.एस.) आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण में भारतीय राज्यों में हरियाणा में सबसे ज्यादा बेरोजगारी दर्ज की गई। राज्य में इंडस्ट्रियल स्किल जरूरतों की बजाये एकेडमिक योग्यता पर ध्यान देने के कारण ज्यादा बेरोजगारी बढ़ रही है। हरियाणा में महिला लेबर फोर्स में भी भागीदारी काफी कम है जिससे कुल बेरोजगारी के मापदंड और बिगड़ रहे हैं। पड़ौसी राज्य हिमाचल प्रदेश में पीरिमाडिक लेबर फोर्स सर्वे दिसंबर 2025 के ुनसार 15–29 आयु वर्ग में 29.9 प्रतिशत सर्वाधिक बेरोजगारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 31.1 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 23 प्रतिशत है। इसी प्रकार पंजाब में 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग में बेरोजगारी दिसंबर 2025 में गत वर्ष की 18.9 प्रतिशत से बढ़कर 19.3 प्रतिशत हो गई इसमें पुरूष बेरोजगारी 19.9 प्रतिशत और महिला बेरोजगारी 30.7 प्रतिशत है। भारत की 11 फीसदी आबादी में लगभग 12 करोड़ लोग बेराजगार हैं।2015–16 में बेरोजगारी की दर 5 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। जहां 12 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। पिछले चार सालों में महिलाओं की बेराजगारी दर 8.7 तक पहुंच गई है।

इस वर्ष जनवरी मास में 15 वर्ष और इससे अधिक आयु वर्ग की बेरोजगारी दर गत वर्ष दिसंबर 2025 की 4.8 प्रतिशत से बढ़कर 5 प्रतिशत हो गई। जोकि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ी है। इस समय सरकार द्वारा (ए.आई.) आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का जोर–शोर से प्रचार किया जा रहा है जोकि भारत में आई.टी. सैक्टर में भी कामयाब नहीं होगा और अमेरीका जैसे विकसित देशों ने भी ए.आई. को नकार दिया है। जहां पर श्रम लेबर अधिक है। हमारी शिक्षा प्रणाली तकनीकी व वैज्ञानिक आधार पर काफी क्षीण है जोकि रोजगार उपयोगी नहीं है, इसलिये ए.आई. के शुरू किये जाने से युवाओं में बेरोजगारी और अधिक बढ़ेगी।एक अनुमान के अनुसार देश में 80 लाख नौकरियों की प्रति वर्ष आवश्यकता है।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण की 2023–24 रिपोर्ट के अनुसार 15 वर्ष व इससे अधिक आयु के व्यक्तियों की सामान्य श्रम बल सहभागिता दर 60 प्रतिशत थी जिसमें 78.8 प्रतिशत पुरूषों व 41.7 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी थी। मानव विकास इस्टीटयूट व अर्न्तराष्ट्रीय लेवर संगठन की सयुक्त रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र की बेरोजगार नफरी में 80 प्रतिशत युवा वर्ग से है जबकि सैकेंडरी व उच्च शिक्षा प्राप्त बेरोजगार युवाओं की संख्या वर्ष 2000 में दर्ज की गई 35.2 से बढ़कर वर्ष 2022 में 65.7 प्रतिशत हो गई। उक्त रिपोर्ट के अनुसार 2022 में 25–29 वर्ष की आयु वर्ग के 8.6 प्रतिशत के इलावा 15–19 वर्ष को युवाओं की बेरोजगार संख्या 13.2 प्रतिशत आंकी गई। युवा पुरूष वर्ग की वर्ष 2000 की 6.2 प्रतिशत बेरोजगारी दर बढ़कर वर्ष 2022 में 12.6 प्रतिशत हो गई व युवा महिलाओं की बेरोजगारी दर वर्ष 2000 की 4.4 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 11.8 प्रतिशत हो गई।

सरकार द्वारा शुरू की गई अग्निपथ योजना भी बेरोजगारी के जख्म पर नमक का काम करेगी। ये केवल बेरोजगारी को बढ़ाने में सहायक होगी। अग्निपथ योजना से अगले चार सालों में तकरीबन तीन लाख प्रशिक्षित सैनिक दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर होंगे, जिससे समाज में अराजकता व अशांति का माहौल बन सकता है जोकि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये घातक सिद्ध होगा। ये प्रशिक्षित सैनिक न तो भूतपूर्व कहलाएंगे और न ही उनका भविष्य सुरक्षित होगा, बल्कि सरकार की शह पर पल रहे बडे बडे औद्योगिक घरानों में सस्ती श्रम शक्ति के तौर पर काम करने को मजबूर होंगे।

राष्ट्र में प्रतिवर्ष औसतन 65 हजार स्थाई सैनिक रिटायर होते हैं और उनके रोजगार तक की कोई स्थाई नीति नहीं है और अब हर चार साल बाद 75 प्रतिशत अग्निवरों की छंटनी के साथ बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ती रहेगी। उदाहरणार्थः अगर सरकार हर वर्ष एक लाख अग्निवीर भर्ती करती है तो चार साल बाद 75 प्रतिशत अग्निवीर यानि 3 लाख अग्निवीरों की बेरोजगार सेना स्वतः बढ़ती रहेगी जिसमें अन्य युवा शिक्षित बेरोजगार व प्रति वर्ष रिटायर होने वाले स्थाई सैनिक अलग होंगे। इसके अलावा पिछले 4 साल से सेना की भर्ती बंद है, जिसमें लाखों युवा बेरोजगार हुए हैं। इससे देश की युवा शक्ति में असंतोष बढेगा और ये राष्ट के लिए खतरा है।

भारत में बेरोजगारी की समस्या का एक कारण भारत की दोष पूर्ण शिक्षा प्रणाली भी रही है। भारतीय विद्यालयों में किताबी शिक्षा दी जाती है। भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक शिक्षा का अभाव रहा है। आधुनिक तकनीक, स्किल विकास व इंडस्ट्रियल स्किल जरूरतों की बनाये एकेडमिक शिक्षा पर ध्यान देने के कारण बेरोजगारी बढ़ रही है। तकनीकी शिक्षा व स्किल विकास की जानकारी के अभाव में एआईआईएमएस, आईआईटी, आईआईएम तथा उच्च स्तरीय प्रशासनिक, सुरक्षा व पुलिस सेवा बल आदि में अधिकांश पद रिक्त रह जाते हैं। भारत में सरकारी नौकरी को न केवल आर्थिक स्थिरता बल्कि सामाजिक सुरक्षा का भी प्रतीक माना जाता है। लेकिन पिछले कुछ समय से NEET, पुलिस भर्ती और शिक्षक पात्रता जैसी बड़ी परीक्षाओं के पेपर लीक और अनियमितताओं ने देश के करोड़ों छात्रों के भविष्य को अधर में लटका दिया है। एक आम या गरीब परिवार का छात्र सालों तक दिन–रात 15 से 18 घंटे पढ़ाई करता है, उसके माता–पिता अपनी जमा–पूंजी कोचिंग और फॉर्म भरने में लगा देते हैं। परीक्षा के ठीक पहले या बाद में जब पेपर लीक होने के कारण परीक्षा रद्द होती है, तो युवाओं का आत्मविश्वास पूरी तरह टूट जाता है। परीक्षाओं के बार–बार टलने और अदालती चक्करों के कारण युवाओं की नौकरी पाने की तय उम्र सीमा निकल जाती है। यह स्थिति उन्हें मानसिक अवसाद और आत्महत्या जैसे आत्मघाती कदमों की ओर धकेल रही है। देश धीमी औद्योगिक वृद्धि, भारत सेवा क्षेत्र में तो आगे बढ़ा है, लेकिन मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में उतनी नौकरियां पैदा नहीं हो पाईं जो देश की विशाल श्रम शक्ति को संभाल सकें।

कोरोना की दो लहर ने इसे और बर्बादी की तरफ धकेल दिया है। एक सर्वे के अनुसार कोरोना लॉकडाउन में देश में हर पांचवें व्यक्ति में एक बेरोजगार हो गया था। इस अवधि के दौरान करीब 65.7 प्रतिशत शिक्षित युवाओं (लगभग 63 लाख) ने अपनी नौकरी गंवाई। कोविड 2022 में किये गये सर्वे के अनुसार महामारी की वजह से 14 प्रतिशत माइक्रो, स्माल व मीडियम एंटरप्राईजेज हमेशा के लिये बंद हो गये। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार जुलाई 2020 और फरवरी 2025 के बीच 75000 पंजीकृत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम बंद हो गये जो कोविड प्रभावित समय से भी ज्यादा हैं। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास संस्थान के अनुसार फरवरी 2022 तक भारत में 47 प्रतिशत माइक्रो स्माल व मीडियम उद्यम बंद कर दिये गये। कोविड–19 ट्रैकर द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण के अनुसार, कोरोना काल में 21.57 फीसदी लोगों की पूरी तरह छटनी हो गई थी और 25.92 फीसदी लोग अभी तक उसी आय या वेतन पर सुरक्षा उपायों के तहत काम कर रहे हैं

कृषि का पिछड़ापन भी एक बडा कारण है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और ग्रामीण समाज की आजीविका का

मुख्य साधन कृषि ही है। लेकिन आज जनसंख्या की अधिकता, खेती को उन्नत करने के लिए पूंजी की कमी, कम हो रही कृषि भूमि, तकनीकी अभाव आदि कारणों से भारत कृषि से पिछड़ रहा है। ग्रामीण भारत में आज भी एक बड़ी आबादी खेती पर निर्भर है, जहां प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) पाई जाती है, यानी जरूरत से ज्यादा लोग एक ही काम में लगे हैं जिससे उनकी आय न के बराबर होती है। सर्वेक्षण के अनुसार कृषि व्यवसाय में लगभग बढ़ रहे घाटे व कृषि व्यवसाय की सरकारी अनदेखी के कारण हर वर्ष 27 प्रतिशत किसान कृषि छोड़कर दूसरे कामों में जाने लगे हैं। इस वर्ष के वित्तिय बजट में भी कृषि व किसानी के लिये कोई प्रावधान नहीं किया गया है। आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बढ़ता दबाव, सीमित हो रहे औद्योगिक विस्तार, सरकारी भर्तियों की दोषपूर्ण व धीमी प्रक्रिया, किताबी शिक्षा युवाओं के सामने बड़ी चुनौती बन रही है। इसके इलावा महिला बेरोजगारी का बढ़ता स्तर, सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से चिंताजनक है। इसलिये कौशल विकास, निजी निवेश तथा स्थानीय रोजगार सृजन पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है।

लघु और कुटीर उद्योगों का विकास की जरूरत है। ये उद्योग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थापित हैं तथा अंशकालीन रोजगार प्रदान करते हैं। इसमें पूंजी कम लगती है और ये परिवार के सदस्यों द्वारा ही संचालित होते हैं। इसके द्वारा बेकार बैठे किसान और उनके घर के सदस्य अपनी क्षमता, श्रम, कला–कौशल और छोटी–छोटी जमा राशि का उपयोग कर अधिक आय और रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। अतः सरकार को इनके विकास के लिये पर्याप्त पूंजी उपलब्ध करानी चाहिए। जिससे ग्रामीण स्तर पर बेरोजगारी को कम किया जा सकता है।

इसी प्रकार नौकरी व रोजगार की तलाश में अनगणित पैसा खर्च कर अपनी जान जोखिम में डालकर गैर कानूनी ढंग से अन्य देशो की ओर रूख कर रहे लाखों युवाओं के लिये वीजा से लेकर दूसरे देशो में शिक्षा व रोजगार सुनिश्चित करने की सरकारी तौर से वैध व उचित व्यवस्था की जानी चाहिये और किसी भी अनहोनी व विपदा के समय युवाओं की वतन वापसी व अन्य आवश्यक कार्यवाही सरकारी तौर से सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अलावा देश को आधुनिक युग की साइंस तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कुप्रभावों से सतर्क रहना होगा।

उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि देश में निरन्तर बढ़ती बेरोजगारी अनेक सामाजिक बुराईयो व अपराधों को जन्म दे रही है जैसे कि नशावृति की लत, नशीली दवाइयों की तस्करी, साईबर अपराध, वित्तिय अपराध तथा दिन प्रतिदिन बढ़ रही डकेती, अपहरण, लूटपाट की हिसंक घटनाये और पैसा ऐठने की धमकी आदि, जिन पर समय रहते नियत्रंण पाना अत्यन्त आवश्यक है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

कूटने से बढ़ती है – 'इम्युनिटी पॉवर'

– डा. एम.एस.मलिक

मैंने काफी बुजुर्ग दादा जी से पूछा, कि पहले लोग इतने बीमार नही होते थे ? जितने आज हो रहे है .... तो दादा जी बोले, बेटा पहले हम हर चीज को कूटते थे जबसे हमने कूटना छोड़ा है, तबसे ही हम सब बीमार होने लग गए है.....

मैंने पूछाः–

वो कैसे ? दादा जी मुस्कुराते हुए, जैसे पहले खेत से अनाज को कूट कर घर लाते थे ...
घर में मिर्च मसाला कूटते थे ....
कभी कभी बड़ा भाई, छोटे भाई को कूट देता था ....
और जब छोटा भाई उसकी शिकायत माँ से करता था .....
तो माँ.. बड़े भाई को कूट देती थी ......
और कभी कभी तो दादा जी भी पोते को कूट देते थे ......
यानी कुल मिलाकर कूटने का सिलसिला निरंतर चलता रहता था...
कभी माँ.. बाजरा कूट कर शाम को खिचड़ी बनाती थी .....
पहले हम कपडे भी कूट कूट कर धोते थे .....
स्कूल में मास्टर जी भी जमकर कूटते थे ....
जहाँ देखो वहां पर कूटने का काम चलता रहता था .....
जिससे कभी कोई बीमारी नजदीक नही आती थी ......
सबका इम्युनिटी पॉवर मजबूत बना रहता था ...
जब कभी बच्चा सर्दी में नहाने से मना करता था .....
तो माँ पहले उसे कूटकर उसकी इम्युनिटी पॉवर बढ़ाती थी, और फिर नहलाती थी ...
जब कभी बच्चा खाना खाने से मना करता था, तब भी माँ पहले कूटती थी फिर खाना खिलाती थी .....
स्कूल से शिकायत आती तो पिताजी कूट देते थे, स्कूल जाने में आना कानी की तो मां कूट देती थी
ऐसे ही सबका इम्युनिटी पॉवर कायम रहता था .....
तो कुल मिलाकर सब कुटाई की महिमा है,
जो आज कल बंद हो गयी है
जिससे हम सब बीमार ज्यादा रहने लग गए है !

बौद्ध धर्म और जाट

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

ईसापूर्व की छठी शताब्दी भारत के धार्मिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि इसमें बौद्ध धर्म का उदय हुआ था। भारतीय समाज सामाजिक धार्मिक शोषण से ग्रस्त था। यह वह समय था जब हिन्दू धर्म की दकियानूसी विचारधारा, जटिल अनुष्ठानों, रीतिरिवाजों, अंधविश्वासों, मनुष्य–मनुष्य में भेद, ऊँच–नीच की दुर्भावना और यज्ञों में दी जाने वाली बलियों आदि के कारण सामान्य जनता में ऊब पैदा होने लगी थी और इस सबसे मानव समाज की मुक्ति के लिए धार्मिक सुधार की आवश्यकता थी। गौतम बुद्ध ने सुधार की मशाल हाथ में थामी और सामाजिक रूप से पिछड़े, आर्थिक रूप से गरीब और धार्मिक रूप से उपेक्षित लोगों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने आत्म–यातना से मुक्त जीवन जीने का सुझाव दिया और वैदिक अनुष्ठानों और कठोर तप साधना, दोनों को त्यागते हुए मध्यम मार्ग अपनाने पर बल दिया। उन्होंने जीवन की समस्याओं का समाधान नैतिक रूप से करने पर बल दिया। बौद्ध धर्म ने आत्मभोग और आत्मपीड़ा को अतिवादी मानते हुए उसकी निन्दा की और सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक जीवन, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि का उपदेश दिया। बुद्ध की शिक्षाएँ उपनिषदों से पूरी तरह अलग नहीं हैं। उन्होंने कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को श्आवागमन और प्रस्थान की शाश्वत प्रक्रिया से मुक्ति के लिए एक सामान्य लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया। गरीबों और दलितों के मसीहा के रूप में में बुद्ध सभी के लिए समान स्थान और स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। वे चली आ रही व्यवस्था को बदलने के बजाय उसमें ही सुधार करना चाहते थे। बुद्ध का यह समतावादी धर्म न केवल भारतीय जनमानस में लोकप्रिय हुआ, अपितु देश के बाहर भी दूर–दूर तक फैलता चला गया।

ईसापूर्व की अन्तिम शताब्दियों में जाटों के पूर्वज युएझियों–शक कुषाणों के निवास में भयंकर अकाल पड़ा, जिस कारण उस इलाके में रहने वाली इन पशुचारक जनजातियों ने दक्षिण–पश्चिम के मैदानी मरु प्रदेशों की ओर नये चरागाह पाने के लिए पलायन किया और उन क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

शक और कुषाण लोगों ने अपने पराक्रम, युद्ध विद्या और शौर्य के बल पर भारत के पश्चिमोत्तर में अपने साम्राज्य की स्थापना की जिसके कारण उनका अनुग्रह पाने के लिए ब्राह्मण वर्ग द्वारा अनधिकृत रूप से उन्हें क्षत्रिय वर्ण में शामिल कर लिया गया, लेकिन जब ब्राह्मणवाद के दमनकारी बोझ से कराह रहे लोगों के लिए एक स्वागत योग्य राहत के रूप में आये बौद्ध धर्म की सादगी और धार्मिक सहिष्णुता के कारण लोग आसानी से बौद्ध हो गये, तब उन्होंने भी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। जब तक शकों ने किसी धर्म को नहीं अपनाया था तब तक ब्राह्मण उन्हें क्षत्रिय मानते रहे, लेकिन जब उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया तो ब्राह्मणों ने रुष्ट होकर उन्हें क्षत्रिय कहना बंद कर दिया और शूद्र वर्ण में डाल दिया। मनु ने लिखा है–

शनकैस्तु क्रियालोपादिमा क्षत्रियजातयः।

वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणदर्शनेन च।।

पौण्ड्रकाश्चोड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः।

पारदापल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ।।

(पौण्ड्र आदि नाम के देशों में उत्पन्न पौण्ड्रक, चौड्र, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश आदि क्षत्रिय जातियां ही धीरे–धीरे धर्म क्रियाओं को छोड़ देने से तथा धर्मोपदेशक ब्राह्मणों का संग न करने के कारण वृषल हो गयीं।) उपरोक्त श्लोक में प्रयुक्त वृषल शब्द का अर्थ नीच होता है।

लम्बे समय से भारत–भूमि में रहने के कारण शक और कुषाण अपने आपको विदेशी नहीं मानते थे। जिस प्रकार प्राचीन काल से ब्राह्मण अपने नाम के अंत में भारद्वाज, वशिष्ठ, हरित, यमदग्नि आदि लिखते थे, उसी प्रकार शकों में अपने नाम के पीछे 'वर्मन' और 'दत्त' लिखने का प्रचलन था, जो इनके समूह का द्योतक था। संस्कृत व्याकरण में 'वर्मन' शब्द का प्रथमा विभक्ति में एक वचन का रूप 'वर्मा' हो जाता है। ध्यान देने की बात है कि जाटों में नाम के अन्त में 'वर्मा' शब्द लगाने की परम्परा आज भी है, यद्यपि यह उनके किसी गोत या समुदाय का नाम नहीं है। कुछ विद्वानों का यह भी अनुमान है कि 'दत्त' शब्द ने ही कालान्तर में जट्ट या जाट शब्द का रूप धारण कर लिया। 'दत्त' शब्द 'दा' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगने से बनता है जिसका अर्थ है, दिया गया या दिया हुआ। हालांकि आजकल 'दत्त' शब्द का प्रयोग ब्राह्मण अपने नाम के साथ करते हैं, परन्तु ऋग्वैदिक काल, उत्तर वैदिक एवं मध्य युग में ब्राह्मण जाति के साथ दत्त शब्द का प्रयोग नहीं मिलता।

भारत में बौद्ध धर्म का पतन मुस्लिम आक्रमणों के कारण हुआ। अरब लोग बुद्ध को 'बुत' कहते थे। इस्लाम के आगमन के समय अफगानिस्तान अफगानिस्तान और और सिंध में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म था। अरब आक्रमणकारियों को सिंध के मन्दिरों और विहारों में बुद्ध की ही प्रतिमाएँ दिखाई पड़ती थीं। मुसलमान विचारकों की दृष्टि में बौद्ध धर्म तथा मूर्तिपूजा (बुत

परस्ती) एक जैसे ही थे अतः बुद्ध के विरोध की जगह मूर्ति (बुत) का विरोध ही प्रमुख हो गया और इस्लाम 'बुत' के शत्रु के रूप में समस्त संसार में प्रकट हुआ। इस प्रकार मूर्ति–भंजन करना बौद्ध धर्म को नष्ट करने का लक्ष्य बन गया। इस्लाम ने बौद्ध धर्म को केवल भारत में ही नष्ट नहीं किया, बल्कि जहाँ भी वह गया, वहीं उसने बौद्ध धर्म को मिटाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी। मुसलमानों के आक्रमण से ब्राह्मण धर्म काफी हद तक बचा रहा, जिसका कारण था कि मुसलमानों को ब्राह्मणों की सहायता और समर्थन प्राप्त था क्योंकि वे (ब्राह्मण) भी बौद्ध धर्म को समाप्त देखना चाहते थे। ब्राह्मणों और भारत के ब्राह्मणवादी शासकों ने भी बौद्धों पर अत्याचार किये। उनके अत्याचारों व उत्पीड़न से बचने के लिए बौद्धों ने बहुत बड़ी संख्या में इस्लाम अंगीकार कर लिया।

यदि बौद्ध धर्म की अवनति पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाये तो जाटों के पूर्व इतिहास का अनुमान लगाया जा सकता है। सम्राट कनिष्क अशोक की भांति महान सम्राट था और उसका अपना विशाल साम्राज्य था। उसके समय में शक, कम्बोज, पहलव आदि जातियाँ, जिन्हें ब्राह्मणों ने वैदिक धर्म से बाहर कर दिया था, बौद्ध हो गयी थीं। इस धर्म परिवर्तन से वैदिक धर्म के झण्डाबरदारों, विशेषकर ब्राह्मणों को भारी धक्का लगा, जिस कारण वे उन जातियों के शत्रु हो गये और उनसे बदला लेने का अवसर ढूंढ़ने लगे, जो आमने–सामने तो सम्भव नहीं था, पर पुस्तकों के माध्यम से संभव था, क्योंकि कलम उन्हीं के हाथ में थी। जब भारत के विश्वविद्यालय, प्राचीन पुस्तकालय और संस्थान नष्ट कर दिये गये, तब ब्राह्मण धर्म, जिसे सनातन और बाद में हिन्दू धर्म नाम दिया गया, के नेताओं ने मुस्लिम राज्य के दौरान, अनेक पुराण–पोथियों की रचना की जिनमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, प्रलय के बाद की पुनर्रचना, देवताओं और सूर्य–चन्द्र राजवंशों के इतिहास, मनु के शासनकाल आदि से सम्बन्धित कथाएँ लिखी गयीं।

जिस प्रकार बुद्ध को अरब लोग 'बुत' कहते थे, जो कालान्तर में अरबों द्वारा मूर्ति के लिए प्रयोग होने लगा और यूनानी 'सिंधु' नदी को 'हिन्दू' नदी और सिंध को हिंद कहते थे, उसी के सदृश कालांतर में शक बौद्ध लोगों द्वारा नाम में लगाये गये 'दत्त' का अपभ्रंश 'जत्त', 'जुत' या जट्ट होना कठिन कार्य नहीं है बल्कि बड़ा आसान है। जाटों की भाषा में पालि से अनेक शब्द ग्रहण किये गये हैं जो बौद्ध प्रभाव दर्शाते प्रतीत होते हैं, जैसे कमजोर के लिए प्रयुक्त बोद्दा (बौद्ध), वरिष्ठों के लिए आदरसूचक थेरा, ठेरा (बुड्ढा–ठेरा), कसूता (स्तूप–सा, विशाल) आदि।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिस प्रकार अफगानिस्तान और सिंध में बौद्ध धर्म के पतन का कारण इस्लाम के अत्याचारों से बचने के लिए बौद्धों द्वारा इस्लाम को अंगीकार करना था, उसी प्रकार पश्चिमोत्तर तथा उत्तर भारत में बौद्ध धर्म में आस्था रखने वाले शकों और कुषाणों का नामकरण जाट के रूप में होने पर उन्हें ब्राह्मणों और उनके अनुयायी राजपूत शासकों के विरोध का सामना करना पड़ा, जो बौद्ध धर्म के शत्रु थे। पीड़ित होकर कुछ जाट, विशेष रूप से राजस्थान के जाट, ब्राह्मण धर्म की ओर झुक गये और स्वयं को 'हिन्दू' मानने लगे और कुछ ने इस्लाम ग्रहण कर लिया।

इसी दौरान शक–कुषाण तथा युएझी अथवा गुटी–जुटी (जाट) अरबी लोगों के सम्पर्क में आये तो अरबी लोगों ने इन्हें 'जुत' या 'जट' नाम दे दिया, क्योंकि 'जुत' संज्ञा सातवीं आठवीं शताब्दी में अरबी स्रोतों में

इफरात से मिलती है। भौगोलिक सीमाओं पर यदि गौर की जाये तो दूसरी–तीसरी शताब्दी ईस्वी में जिस क्षेत्र पर कुषाणों का राज्य था और उसके आसपास के काल में यौधेय वास करते थे, उसी इलाके में सैंकड़ों वर्षों से जाट निवास करते हैं।

इतिहासकार ए.एच.बिंग्ले लिखता है– 'शक आप्रवासियों से ही अधिकांश जाट जनजातियाँ विभेदित हुईं।' आगे वह लिखता है, भारत में उनके आगमन के तुरन्त बाद इनमें से अधिकांश शक आप्रवासी समय के साथ बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो गये, हालांकि समय के साथ–साथ उनका धर्म उनके अन्य पड़ोसियों के धर्म में समाहित हो गया और दसवीं शताब्दी तक उन्होंने संशोधित सीमा तक न केवल जाति व्यवस्था के प्रतिबंधों और भेदों को स्वीकार कर लिया था, बल्कि ब्राह्मणों की आध्यात्मिक सर्वोच्चता को भी स्वीकार कर लिया, हालांकि बहुत गंभीरता से नहीं। वह यह भी लिखता है, हमारे राजपूतों की अग्निकुल जनजातियों के पूर्वजों को आमतौर पर बौद्ध (जाट) माना जाता है, परन्तु हिन्दू (ब्राह्मण) धर्म के लिए की गयी उनकी सेवाओं के पुरस्कार के रूप में उन्हें द्विजों की क्षत्रिय श्रेणी में सम्मिलित कर लिया गया था। उनको उच्च कुल में शामिल करने के बारे में बताने के लिए कोई कहानी आवश्यक थी, इस सोच के कारण बुद्धिमान ब्राह्मणों ने मूल जातियों से अलग दिखाने के लिए आबू पर्वत पर उनकी उत्पत्ति की कथा तैयार करके उन्हें सूर्य और चन्द्रवंश के बताया। यह विश्वास इस बात से और भी मजबूत होता है कि कई राजपूत और जाट गोत्रों के नाम एक हैं जैसे चौहान, पंवार, राणा, दहिया, रावत, भट्टी, बागड़ी आदि।

बौद्ध प्रभाव से ही सम्भवतः उसकी शाखाओं हीनयान और महायान की तर्ज पर जाटों के बालियान, कादियान, राजयान, ओहल्यान, मेंहदीयान, खाटियान, माठियान आदि जाट गोतों का नामकरण हुआ होगा।

कभी भी इंसान, अपनी मर्जी से नहीं बदलता। सामने वाले का व्यवहार और विचार उन्हें मजबूर कर देता है।।

महाराजा रणजीत सिंह

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

महाराजा रणजीत सिंह (1780–1839) सिख साम्राज्य के पहले महाराजा थे। वे शेर–ए पंजाब के नाम से प्रसिद्ध हैं। महाराजा रणजीत एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने न केवल पंजाब को एकजुट किया, बल्कि अपने जीते–जी अंग्रेजों को अपने साम्राज्य के पास भी नहीं भटकने दिया।

महाराजा रणजीत सिंह का जन्म सन् 1780 में गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) महाराजा महा सिंह के घर हुआ था। उन दिनों पंजाब पर सिख और अफगानों का राज चलता था जिन्होंने पूरे इलाके को कई मिसलों में बांट रखा था। रणजीत के पिता महा सिंह सुकरचकिया मिसल के कमांडर थे। पश्चिमी पंजाब में स्थित इस इलाके का मुख्यालय गुजरांवाला में था। बचपन में महाराजा रणजीत सिंह की बाई आंख की रोशनी चेचक की बिमारी के कारण चली गयी थी। वे महज 12 वर्ष के थे जब उनके पिता चल बसे और राजपाट का सारा बोझ उन्हीं के कंधों पर आ गया। 12 अप्रैल 1801 को रणजीत सिंह ने महाराजा की उपाधि ग्रहण की। गुरु नानक जी के एक वंशज ने उनकी ताजपोशी संपन्न कराई। उन्होंने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया और सन 1802 में अमृतसर की ओर रूख किया।

महाराजा रणजीत ने अफगानों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ीं और उन्हें पश्चिमी पंजाब की ओर खदेड़ दिया। अब पेशावर समेत पश्तून क्षेत्र पर उन्हीं का अधिकार हो गया। यह पहला अवसर था जब पश्तूनों पर किसी गैर–मुस्लिम ने राज किया। उसके बाद उन्होंने पेशावर, जम्मू कश्मीर और आनंदपुर पर भी अधिकार कर लिया। पहली आधुनिक भारतीय सेना – 'सिख खालसा सेना' गठित करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। उनकी सरपरस्ती में पंजाब अब बहुत शक्तिशाली सूबा था। इसी ताकतवर सेना ने लंबे अर्से तक ब्रिटेन को पंजाब हड़पने से रोके रखा। एक ऐसा मौका भी आया जब पंजाब ही एकमात्र ऐसा सूबा था, जिस पर अंग्रेजों का कब्ज्जा नहीं था। ब्रिटिश इतिहासकार जे टी व्हीलर के मुताबिक, अगर वह एक पीढ़ी पुराने होते, तो पूरे हिंदूस्तान को ही फतह कर लेते। महाराजा रणजीत खुद अनपढ़ थे, लेकिन उन्होंने अपने राज्य में शिक्षा और कला को बहुत प्रोत्साहन दिया।

उन्होंने पंजाब में कानून व्यवस्था कायम की और कभी भी किसी को मृत्युदण्ड नहीं दिया। उनका सूबा धर्मनिरपेक्ष था उन्होंने हिंदुओं और सिखों से वसूले जाने वाले जजिया पर भी रोक लगाई। कभी भी किसी को सिख धर्म अपनाने के लिए विवश नहीं किया। उन्होंने अमृतसर के हरिमन्दिर साहिब गुरूद्वारे में संगमरमर लगवाया और सोना मढ़वाया, तभी से उसे स्वर्ण मंदिर कहा जाने लगा।

बहुमूल्य कोहिनूर हीरा महाराजा रणजीत सिंह के खजाने की रौनक था। सन् 1839 में महाराजा रणजीत का निधन हो गया। उनकी समाधि लाहौर में बनवाई गई, जो आज भी वहां कायम है। उनकी मौत के साथ ही अंग्रेजों का पंजाब पर शिकंजा कसना शुरू हो गया। अंग्रेज–सिख युद्ध के बाद 30 मार्च 1849 के दिन पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना लिया गया और कोहिनूर विक्टोरिया के हुजूर में पेश कर दिया गया।

रणजीत सिंह में सैनिक नेतृत्व के बहुत सारे गुण थे। वे दूरदर्शी थे। वे साँवले रंग के नाटे कद के मनुष्य थे। उनकी एक आँख होते हुये भी वे तेजस्वी थे। इसलिए जब तक वह जीवित रहे, सभी मिस्लें दबी रही।

उस समय अंग्रेजों का राज्य यमुना तक पहुँच गया था और फुलकियाँ मिस्ल के राजा अंग्रेजी राज्य के प्रभुत्व को मानने लगे थे। अंग्रेजों ने रणजीतसिंह को इस कार्य से मना किया। रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से लड़ना उचित न समझा और संधि कर ली कि सतलुज के आगे हम अपना राज्य न बढ़ाएँगे। रणजीतसिंह ने फ्रांसीसी सैनिकों को बुलाकर, उसकी सैनिक कमान में अपनी सेना को विलायती ढंग पर तैयार किया।

अब उन्होंने पंजाब के दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी भागों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया और दस वर्ष में मुल्तान, पेशावर और कश्मीर तक अपने राज्य को बढ़ा लिया।

रणजीतसिंह ने पेशावर को अपने अधिकार में अवश्य कर लिया था, किंतु उस सूबे पर पूर्ण अधिकार करने के लिए उसे कई वर्षों तक कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। वह पूरे पंजाब का स्वामी बन गया और उसे अंग्रेजों के हस्तक्षेप का सामना नहीं करना पड़ा। परंतु जिस समय अंग्रेजों ने नैपोलियन की सेनाओं के विरुद्ध सिक्खों से सहायता माँगी थी, उन्हें प्राप्त न हुई।

रणजीतसिंह ने सन् 1808 ई. में अपनी महत्वाकांक्षिणी सास सदाकौर के नाम पेशावर का राज्य परिवर्तित कर दिया था क्योंकि यह अंग्रेजों की एजेंट महिला थी। रणजीतसिंह ने अपनी कुचक्रप्रिय सास से झगड़ा करके उसे कैद कर लिया था और ह्वदनी के गढ़ को अपने अधिकार में कर लिया था।

ब्रिटिश सेना की एक टुकड़ी ने बंदी विधवा सदाकौर को छुड़ाया और अधिकार को वापस दिलाया। ब्रिटिश सेना के साथ रणजीतसिंह किसी प्रकार का झगड़ा नहीं चाहते थे।

अंग्रेजों की तरफ से संधि की शर्तों को भंग करने का आरोप लगाया जा सकता था। इसलिए चुपचाप मौन रहकर उन्होंने तैयारियाँ प्रारम्भ की थीं फिर भी 1809 ई. में लार्ड मिंटो से संधि कर ली। यद्यपि इस संधि से महाराज को सिक्खों में बहुत अपमानित होना पड़ा था। उपर्युक्त संधि के कारण पंजाब के अफगानी राज्य तथा अफगानिस्तान को कुछ हद तक आंतकित कर सके थे। 1802, 1806 तथा 1810 ई. में मुल्तान पर चढ़ाई की और अधिकार कर लिया एवं शाह शूजा से संधि करके अपने यहाँ रखा और उससे एक गिलास पानी के लिए 'कोहिनूर हीरा' प्राप्त किया। 1811 ई. में काबुल के शाह महमूद के आक्रमण की बात सुनकर और यह जानकार कि महमूद का इरादा काश्मीर के शासक पर आक्रमण का है, उसने काश्मीर पर आक्रमण कर दिया ताकि महमूद को वापस जाना संभव हो जाए और उसकी मित्रता भी इसे मिल जाए। काश्मीर के बाद इसने पेशावर पर 1822 में चढ़ाई कर दी, यारमुहम्मद खाँ अफगानियों का नेतृत्व करता हुआ बहुत बहादुरी से लड़ा लेकिन अंत में पराजित हुआ। इस युद्ध में सिक्खों का भी बड़ा नुकसान हुआ। 1838 में पेशावर पर रणजीत सिंह के अधिकार से भयभीत होकर दोस्त मुहम्मद खाँ काबुल बहुत भयभीत हुआ और रूस तथा ईरान से दोस्ती कर ली। इस बात को ध्यान में रखकर अंग्रेजों ने स्वयं रणजीतसिंह तथा शाहशुजा के साथ एक त्रिगुटसंधि कराई।

महाराजा रणजीतसिंह अस्वस्थ हो रहे थे। 1838 में लकवा का आक्रमण हुआ, यद्यपि उपचार किया गया और अंग्रेज डाक्टरों ने भी इलाज किया, लेकिन 27 जून 1839 ई. को उनका देहांत हो गया। वे उदार हृदय भी थे। कांशी विश्वनाथ मंदिर पर जो स्वर्णपत्र आज दिखाई देता है वह उनकी कांशी यात्रा तथा उदारता का परिचायक है। उसने दान के लिए 47 लाख रुपए की सम्पत्ति अलग कर रखी थी। जगन्नाथ मंदिर पर भी वह कोहिनूर हीरा चढ़ाना चाहते थे लेकिन उस हीरे को तो विदेश में जाकर छिन्न–भिन्न होना था।

महाराजा के बाद सिक्खों के आपसी वैमनस्य, राष्ट्रद्रोह तथा अंग्रेजी कूटनीतिज्ञता का जवाब न देने की असमर्थता से सिक्ख राज्य मिट गया।

बात सन् 1812 की है। पंजाब पर महाराजा रणजीत सिंह का एकछत्र राज्य था। उस समय महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर के सूबेदार अतामोहम्मद के शिकंजे से कश्मीर को मुक्त कराने का अभियान शुरू किया था। इस अभियान से भयभीत होकर अतामोहम्मद कश्मीर छोड़कर भाग गया। कश्मीर अभियान के पीछे एक अन्य कारण भी था। अतामोहम्मद ने महमूद शाह द्वारा पराजित शाहशुजा को शेरगढ़ के किले में कैद कर रखा था। उसे कैदखाने से मुक्त कराने के लिए उसकी बेगम वफा बेगम ने लाहौर आकर महाराजा रणजीत सिंह से प्रार्थना की और कहा कि मेहरबानी कर आप मेरे पति को अतामोहम्मद की कैद से रिहा करवा दें, इस अहसान के बदले बेशकीमती कोहिनूर हीरा आपको भेंट कर दूंगी। शाहशुजा के कैद हो जाने के बाद वफा बेगम ही उन दिनों अफगानिस्तान की शासिका थी। इसी कोहिनूर को हड़पने के लालच में भारत पर आक्रमण करने वाले अहमद शाह अब्दाली के पोते शाह जमान को स्वयं उसी के भाई महमूद शाह ने कैदखाने में भयंकर यातनाएं देकर उसकी आंखें निकलवा ली थीं।

शाह जमान, अहमद शाह अब्दाली के बेटे तैमूर शाह का बेटा था, जिसका भाई महमूद शाह था। अतः महाराजा रणजीति सिंह स्वयं चाहते थे कि वे कश्मीर को अतामोहम्मद से मुक्त करवाएं। अतः संयोग आने पर महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर को आजाद करा लिया। उनके दीवान मोहकम चंद कोछड़ ने शेरगढ़ के किले को घेर कर वफा बेगम के पति शाहशुजा को रिहा कर वफा बेगम के पास लाहौर पहुंचा दिया। राजकुमार खड्गसिंह ने उन्हें मुबारक हवेली में ठहराया। पर वफा बेगम अपने वादे के अनुसार कोहिनूर हीरा महाराजा रणजीत सिंह को भेंट करने में विलम्ब करती रही। यहां तक कि कई महीने बीत गए। जब महाराजा ने शाहशुजा से कोहिनूर हीरे के बारे में पूछा तो वह और उसकी बेगम दोनों ही बहाने बनाने लगे। जब ज्यादा जोर दिया गया तो उन्होंने एक नकली हीरा महाराजा रणजीत सिंह को सौंप दिया, जो जौहरियों के परीक्षण की कसौटी पर नकली साबित हुआ। रणजीत सिंह क्रोध से भर उठे और मुबारक हवेली घेर ली गई। दो दिन तक वहां खाना नहीं दिया गया। वर्ष 1813 की पहली जून थी जब महाराजा रणजीत सिंह शाहशुजा के पास आए और फिर कोहिनूर के विषय में पूछा। धूर्त शाहशुजा ने कोहिनूर अपनी पगड़ी में छिपा रखा था। किसी तरह महाराजा को इसका पता चल गया। अतः उन्होंने शाहशुजा को काबुल की राजगद्दी दिलाने के लिए 'गुरुग्रंथ साहब' पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा की। फिर उसे 'पगड़ी–बदल भाई' बनाने के लिए उससे पगड़ी बदल कर कोहिनूर प्राप्त कर लिया। पर्दे की ओट में बैठी वफा बेगम महाराजा की चतुराई समझ गईं। अब कोहिनूर महाराजा रणजीत सिंह के पास पहुंच गया था और वे संतुष्ट थे कि उन्होंने कश्मीर को आजाद करा लिया था। उनकी इच्छा थी कि वे कोहिनूर हीरे को जगन्नाथपुरी के मंदिर में प्रतिष्ठित भगवान जगन्नाथ को अर्पित करें। हिन्दू

मंदिरों को मनों सोना भेंट करने के लिए वे प्रसिद्ध थे। काशी के विश्वनाथ मंदिर में भी उन्होंने अकूत सोना अर्पित किया था। परन्तु जगन्नाथ भगवान (पुरी) तक पहुंचने की उनकी इच्छा कोषाध्यक्ष बेलीराम की कुनीति के कारण पूरी न हो सकी।

महाराजा रणजीत सिंह की विजय

महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति का नाम हरि सिंह नलवा एक जाबाज व बहादुर सेनापति था। जिसने अपने सैनिक अभियानों में महाराजा रणजीत सिंह का बढ़चढ़ कर साथ दिया और लगभग सभी मिसलों तथा पंजाब पर अधिकार कर लिया। उन्होंने मुख्यतः लाहौर, अमृतसर, झंग, मुलतान, कांगड़ा, अटक, कश्मीर, पेशावर, डेरा इस्माईल खां, बन्नू आदि पर पूर्णरूप से अधिकार कर लिया था। मुगलो और पठानों में हरि सिंह नलवा की इतनी धाक जम गई थी कि पठानों का कोई बच्चा रात को रोता तो पठानी ये कह कर बच्चे को सुला देती थी कि बेटा सो जा नहीं तो हरिसिंह नलवा आ जायेगा। इनके राज्य की सीमाएं उत्तर में कराकौरम और तिब्बत तक, उत्तर–पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत व सुलेमान की पहाड़ियों तक, दक्षिण–पूर्व में सतलुज नदी तक और दक्षिण–पश्चिम में सिन्ध प्रांत तक इनका राज्य था। इनका राज्य चार प्रांतों में बटा हुआ था – लाहौर, मुलतान, कश्मीर और पैशावर। इनका राज्य समस्त में भारत में हिन्दू राजाओं में सबसे बड़ा था। मुगलों और पठानों के ईलावा अंग्रेजों में भी महाराजा रणजीत सिंह का बड़ा खौफ था। पटियाला और जीन्द रियासतों में महाराजा रणजीत सिंह की रिश्तेदारियां थी। दोंनो का किसी बात को लेकर आपसी तनाव हो गया तो समझौते के लिये महाराजा रणजीत सिंह को पटियाला बुला लिया तो अंग्रेजों से हुई 1809 ई० की संधि का उल्लघंन तो होना ही था क्योंकि पटियाला सतलुज पार करके ही जाना था। वाईस राय भारत सरकार ने महारानी विक्टोरिया को संदेश भेजा कि महाराजा रणजीत सिंह ने संधि का उल्लघंन कर दिया है। महारानी विक्टोरिया का जबाब आया कि इसको नहीं छेड़ना, यदि छेड़ दिया तो बाकी सारे भारत के राज्य से हाथ धोना पड़ सकता है। क्योंकि महाराजा रणजीत सिंह उस समय एक शक्तिशाली योद्धा थे। महाराजा रणजीत सिंह ने दोनों रियासतों में समझौता करवा के वापिस लाहौर चले गये थे। लेकिन अंग्रेजों द्वारा महाराजा रणजीत सिंह को कुछ कहने का साहस नहीं हुआ।

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजों ने सन् 1845 में सिखों पर आक्रमण कर दिया। फिरोजपुर क्षेत्र में सिख सेना वीरतापूर्वक अंग्रेजों का मुकाबला कर रही थी। किन्तु सिख सेना के ही सेनापति लालसिंह ने विश्वासघात किया और मोर्चा छोड़कर लाहौर पलायन कर गया। इस कारण विजय के निकट पहुंचकर भी सिख सेना हार गई। अंग्रेजों ने सिखों से कोहिनूर हीरा ले लिया। साथ ही कश्मीर और हजारा भी सिखों से छीन लिए क्योंकि अंग्रेजों ने डेढ़ करोड़ रुपए का जुर्माना सिखों पर किया था, धन की कमी की वजह से सिख किसी तरह केवल 50 लाख रुपए ही दे पाए थे। लार्ड हार्डिंग ने इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया को खुश करने के लिए कोहिनूर हीरा लंदन पहुंचा दिया, जो 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' द्वारा रानी विक्टोरिया को सौंप दिया गया। उन दिनों महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह वहीं थे। कुछ लोगों का कथन है कि दिलीप सिंह से ही अंग्रेजों ने लंदन में कोहिनूर हड़पा था। कोहिनूर को 1 माह 8 दिन तक जौहरियों ने तराशा और फिर उसे रानी विक्टोरिया ने अपने ताज में जड़वा लिया।

चौधरी लालचन्द फौगाट

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

चौधरी लालचन्द महाराज जमनादास के मध्यम पौत्र थे। आपका जन्म भालोट में 1882 के आसपास हुआ। आप शिक्षा प्राप्त करके नायब तहसीलदार बने। बाद में आप वकालत करने लगे। आप केवल कत्ल के केस लेते थे। बड़े प्रसिद्ध वकील थे। लोगों के लिए बड़े–बड़े मुडेव हुक्का–पानी रखते थे। अंग्रेज ने आपकी योग्यता देखते हुए आपको सम्मानित न्यायाधीश व सम्मानित कैप्टन की उपाधि दी थी। किसी भी मुकदमे के निर्णय को बदलने की शक्ति आपको दी गई थी। इसी प्रकार विशेष पदों पर भर्ती में आपकी सलाह ली जाती थी। आप सरकारी कामकाज में दखल नहीं देते थे लेकिन लोगों के कहने पर आपने अनेक युवाओं को उच्च पदों पर नियुक्त करवाया तथा अनेक व्यक्तियों को न्यायालय द्वारा दोषी करार दिए जाने पर भी अपनी मैजिस्ट्रेटी पावर से मुक्त कर देते थे। लालचन्द चौ. छोटूराम ओभानी गंगाराम श्री बलदेव सिंह हुमायूंपुर, लाहौर में साथ ही पढ़ते थे। चौ. छोटूराम प्लेग की बिमारी में वापिस आ गए थे तथा कुछ दिन बाद कालाकांकर नरेश के यहां जाकर नौकरी करने लगे। इसी समय आगरा से वकालत करके आगरा में ही वकालत करने लगे लेकिन उनका वकालत का काम वहां जमा नहीं। चौ. लालचन्द ने चौ. छोटूराम को रोहतक बुला लिया। यहां

परिस्थितियां जितनी ज्यादा आपको तोड़ती है । उससे कहीं ज्यादा आपको मजबूत बना देती हैं।।

दोनों मिलकर वकालत करने लगे। आप अब माल नम्बरदारी, जैलदारी, सफेद पोशी व भूमि विवाद व राजस्व के केस लेने लगे तथा चौ. छोटूराम दीवानी व फौजदारी का सारा काम करते थे। 1913 से 1921 तक आपने साझे में वकालत की। आय भी आधी आधी बांट लेते थे। किसान व जाट विरोधी लोगों ने अनेक बार दोनों में फूट डालनी चाही। वे कहते थे कि चौ. छोटूराम काम तो आप ज्यादा करते हो, फिर भी आधी आय चौ. लालचन्द ले जाते हैं। चौ. लालचन्द पंजाब कौंसिल के मेम्बर है तथा अम्बाला कमिश्नरी के रैंगरूटिंग अफसर की उनकी आमदनी है। उसमें ये आपको कुछ नहीं देते, लेकिन चौ. छोटूराम को चौ. लालचन्द अधिक पैसा देने की पेशकश करते, तब भी वे नहीं लेते थे। चौ.छोटूराम चौ. लालचन्द पर भारी श्रद्धा रखते थे। वे उनके कानूनी ज्ञान से प्रभावित थे। वे समझते थे चौ. लालचन्द की तरक्की तमाम जाटों की इज्जत है। यदि हमारी जोड़ी बिगड़ती है तो जाट कौम का दबदबा नहीं रहेगा। किसानों में निराशा आ जाएगी। इसीलिए चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द में पूरी तरह मिलकर चलते थे। चौ. लालचन्द का रसूख बड़े–बड़े लोगों में था। चौ. छोटूराम आम लोगों के दिलों में बैठे थे। दोनों की छवि से शासन प्रशासन में उनकी धाक थी।

किसानों की कर्जा माफी व भूमि वापसी

जब पंजाब विधानसभा में किसान कर्जा माफी बिल तथा भूमि वापसी बिल पारित होने पर भी राज्यपाल ने उसे स्वीकृत नहीं किया तो चौ. लालचन्द वायसराय सलाहकार समिति की बैठक में बतौर सदस्य गए तब बैठक के बाद ये वायसराय से मिले। उन्होंने कर्जा माफी व भूमि वापसी बिल पर राज्यपाल द्वारा हस्ताक्षर न करने की बात रखी और कहा कि 100–100 रुपये के ऋण पर बार– बार झूठे अंगूठे लगवाकर अनपढ़ किसानों की धरती व घर कुड़क कर लिए है। इन्हें वापिस घर जमीन देना व ऋण माफी करना बहुत जरूरी है। इससे सरकार की साख भी बहुत बढ़ जाएगी। वायसराय ने राज्यपाल को बुलाकर बिल पर हस्ताद्वार करवाये। चौ.लालचन्द ने चौ. छोटूराम को बताया कि बिल पर राज्यपाल के हस्ताक्षर हो गए हैं। आप कर्जा माफी व भूमि वापसी की घोषणा के लिए रोहतक आ जाओ। हजारों हिन्दू मुसलमान किसानों के साथ बैंडबाजे व हाथी के साथ चौ. लालचन्द, चौ.छोटूराम को लेने स्टेशन पर पहुंचे। जुलूस में चौ. छोटूराम को हाथी पर बैठाया गया। रास्ते में कुछ व्यापारियों ने काले झंडे भी दिखाए लेकिन चौ. छोटूराम ने कहा कि इसमें व्यापारियों का भी लाभ है तथा आगे और भी लाभ बढ़ेगा। जुलूस चौ. छोटूराम की नीली कोठी तक आया वहां सभी ने बिल केहक में बातें रखी। चौ. लालचन्द खुद नहीं बोले कहा कि चौ. छोटूराम ही सब बात बता देंगे। चौ. छोटूराम सबके बाद बोले तथा सभी बातों की लाभ–हानि समझाई।

यूनियनिस्ट पार्टी बनवाई

श्री छोटूराम के कांग्रेस छोड़ने के बाद चौ. लालचन्द ने कहा कि आप जो कुछ भी किसानों के लिए करना चाहते हो वो कैसे करोगे ? राजनीति के बिना यह संभव नहीं। चौ. छोटूराम ने कहा– "किसान पार्टी" बनाई जाए। चौ. लालचन्द ने कहा कि पार्टी का नाम "यूनियनिस्ट पार्टी" रखो। तब पार्टी का नाम यूनियनिस्ट पार्टी रखा गया। चौ. लालचन्द पंजाब प्रांतीय जाट महासभा के प्रधान थे तथा महासचिव चौ. छोटूराम थे। जाट महासभा में जो भी जाट था भले ही वह हिन्दू मुसलमान या सिख हो सम्मिलित हो सकता था। इसलिए जाट महासभा के सभी हिन्दु सिख मुसलमानों का भी पूरा सहयोग "यूनियनिस्ट पार्टी" को मिला। संयुक्त पंजाब में इस पार्टी ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग को किनारे कर दिया तथा भारी बहुमत से जीतकर किसान हित में काम किए। पहली बार रोहतक/गोहाना से मातूराम को हरा कर लालचन्द जीत गए और कृषि मंत्री रहें लेकिन बहादुरगढ़/सोनीपत से चौ० छोटूराम हार गए और दूसरी बार लालचन्द ने मातुराम को हरा दिया और कृषि मन्त्री और छोटूराम जी भी जीत गए लेकिन लालचन्द के विरूद्ध मातूराम ने गलत वोट डाल कर पेटिशन दायर कर दी। जिसमें लालचन्द हार गए और चौ० छोटूराम कृषि मंत्री बने।

भाखड़ा बाँध के लिए भूमि दिलाने में सहयोग

चौ. छोटूराम ने भाखड़ा बांध की योजना बनाई तो लगभग 60 किलोमीटर भूमि की जरूरत पड़ी जो कि महाराजा विलासपुर के राज्य में लगती थी। महाराजा भूमि देने के लिए तैयार नहीं थे। इस अवसर पर चौ. लालचन्द ने महाराजा विलासपुर को किसानों के हित में यह भूमि देने के लिए तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई और महाराजा को भूमि देने के लिए मना लिया। जिससे बांध का काम आगे बढ़ पाया। भूमि अधिग्रहण की ऐसी बेमिसाल कवायद प्रारंभ की, जो कम ही देखने को मिलती है। नंगल व भाखड़ा गांव के लोगों को टोहाना के पास जमीन के बदले जमीन दी गई और नौकरी सहित मकान बनाने के लिए मुआवजा दिया गया।

जाट स्कूल में सहयोग

जाट एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की स्थापना हुई एक बैठक में स्कूल का सम्बन्ध विश्वविद्यालय व सरकारी नियंत्रण से बाहर रखने का निश्चय कर लिया गया। बैठक में चौ. छोटूराम व चौ. लालचन्द दोनों नहीं आ पाए थे। चौ. छोटूराम ने इलाके के समझदार लोगों को बुलाकर समझाया कि बिना सरकारी मान्यता के स्कूल से पढ़कर निकले युवाओं को नौकरी नहीं मिल सकती इसलिए विश्वविद्यालय की मान्यता

रखना जरूरी है, लेकिन चौ. बलदेवसिंह ने यह बात नहीं मानी। सभी लोग चौ. बलदेवसिंह के त्याग व तप के कायल थे। इस अवस्था में चौ. लालचन्द के सहयोग से चौ. छोटूराम ने "जाट हीरोज हाईस्कूल" नाम से एक दूसरे स्कूल की स्थापना कर दी। चौ. लालचन्द इस स्कूल के उत्सवों पर थल सेनाध्यक्ष तथा भरतपुर नाभा, पटियाला आदि के राजाओं को बुलाकर सहयोग लेते थे। स्कूल में 700 के लगभग छात्र हो गए, जबकि पहले स्थापित स्कूल में 60–70 छात्र ही रहे चौ. बलदेव सिंह ने अपने स्कूल को दूसरे स्कूल में ही मिला दिया। दोनों स्कूलों को मिलाकर नाम रखा गया– जाट हीरोज मैमोरियल एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल यह संस्था अनेक विभागों व महाविद्यालयों के रूप में विस्तृत होकर विश्वविद्याल के समान कई हजार छात्रों को शिक्षित कर रही है। चौ. लालचन्द ने रोहणा में क स्कूल भी स्थापित करवाया था।

ईमानदार, संतोषी, धैर्यवान व विवेकशील

चौ.लालचन्द बड़े गुणवान व्यक्ति थे। जहां आप संतोषी सरल स्वभाव के थें। वे बड़े ईमानदार धैर्यशील व विवेकी व्यक्ति थे। इस प्रकार की कई घटनाएं हैं जिससे यह प्रकट होता है।

प्रथम घटनाः– तीसरी बार रोहतक हल्के से चौ. लालचन्द चुनाव के लिए खड़े हुए उधर खिड़वाली के चौ.रामस्वरूप भी चुनाव में खड़े हो गए। चौ. लालचन्द ने कहा– भाई जब मैं चुनाव में खड़ा हूँ तो आप बिना सलाह के ही खड़े हो गए तो आपने ठीक नहीं किया। आप पहले ही मुझे बता देते तो ठीक रहता। अब मैं चुनाव लड़ रहा हूँ। आप रहने दो। चौ. रामस्वरूप ने कहा– मैं तो जरूर चुनाव लडूंगा आप लड़े या ना लड़े। चौ. लालचन्द बोले– इतना जरूरी समझ रहे हो तो आप ही चुनाव लड़े। अपना नाम वापिस लेकर आपकी मदद करूंगा। आपने अपना नाम वापिस लेकर चौ. रामसरूप की मदद की। यह सूझबूझ भाईचारे व त्याग का उदाहरण है।

दूसरी घटनाः– चौ. लहरी सिंह लालचन्द के अनुयायी थे। उन्होंने डकैतों और गुण्डागर्दी करने वाले लोगों को खत्म करने की योजना बना कर उन्हें खत्म करने का काम शुरू कर दिया। चौ. लालचन्द को पता लगा कि चौ. लहरीसिंह चौ. रामस्वरूप को भी निशाना बनाना चाहते हैं। आपने तुरंत चौ. रामस्वरूप को सावधान कर दिया तथा उन्हें पंजाब से बाहर गोपनीय स्थान पर भेज दिया तथा चौ. लहरीसिंह को भी समझा दिया कि अब इसके पीछे मत पड़ो। जिससे वे बच गए। चौ. रामसरूप हरिद्वार की 'पंजाब सिध धर्मशाला' में रहे तथा धर्मशाला से उन्होंने सरदारों का नाजायज कब्जा हटवाकर उसका ट्रस्ट बनवाया था। आज भी चौ. रामसरूप के परिवारजन उसके ट्रस्टी हैं। चौ.लालचन्द की अत्येष्टि पर चौ. रामसरूप ने बड़े भावुक होकर कहा था कि आज मेरा आदर्श व जीवन रक्षक चला गया।

तीसरी घटनाः– रोहतक के सेठ श्रीकिशनदास के पिता सेठ जगदीशराय ने – रोहतक में गोकर्ण तालाब पर 16 एकड़ जमीन खरीदी। यह जमीन सेठ जगदीशराय ने टैक्स से बचने के लिए किसान होने के कारण चौ. लालचन्द के नाम करवा दी। सेठ जगदीशराय के निधन के बाद जमीन के कागज सेठ जगदीशराय के पुत्र सेठ श्रीकिशन दास के नाम तैयार करवा दिए और उनके हस्ताक्षर भी कराने के लिए उनके घर पहुंच गए। सेठ श्रीकिशन बोले– यह आपने क्या किया? चौ. लालचन्द बोले– भाई! बच्चों का क्या भरोसा है? कल क्या करेंगे ? मैं अभी यह जमीन आपके नाम जरूर कराऊंगा। हस्ताक्षर करो। सेठ श्रीकिशनदास को न चाहते हुए भी हस्ताक्षर करने पड़े। इस प्रकार पराई जमीन वापिस कर चौ. लालचन्द निश्चित हो गए।

चौथी घटनाः– एक बार परिवारजनों ने चौ. लालचन्द से कहा कि आप चाचा हरद्वारी को तहसीलदार लगावा दो चौ. लालचन्द ने डीसी अंग्रेज से कहा तो वह बोला कि आप त्यागपत्र दे दो आपकी जगह लगा दूंगा। चौ. लालचन्द ने त्यागपत्र देकर चाचा हरद्वारी को तहसीलदार लगवा दिया। कहने पर भी त्याग पत्र वापिस नहीं लिया।

पंजाब सर्विस कमीशन की चेयरमैनी छोड़ी

चौ. छोटूराम ने चौ. लालचन्द को पंजाब सर्विस कमीशन का चेयरमैन बनवाया। चौ. लालचन्द ने देखा कि रिक्तियां कम होती हैं तथा सर्विस चाहने वाले अधिक है। न्यायपूर्ण ढंग से भी नियुक्तियां की जाती हैं तब भी लोग नाराज होते हैं। यह देख आपने सर्विस कमीशन चेयरमैन पद से ही त्याग पत्र दे दिया। फिर भी कोई व्यक्ति मदद चाहता तो उसकी मदद करते रहते थे।

पांचवीं घटनाः– हरियाणा के एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ने अन्तिम समय चौ. लालचन्द के बारे में बात चलने पर कहा था कि चौ. लालचन्द बेहद ईमानदार व बुद्धिमान व्यक्ति थे। हमारी ही राजनैतिक भूख ने उनको बदनाम किया।

भरतपुर रियासत के राजस्व मंत्री

चौ. लालचन्द ने रोहतक गोहाना हल्के से चुनाव लड़ा और जीत गए और कृषि मन्त्री बने लेकिन दूसरी बार मुकाबले में हार चुके चौ.मातुराम ने न्यायालय में गलत वोट डालने का काम कर दिया। मुडलाना में मृत व्यक्ति की वोट डाली गई सिद्ध हो गई। इससे चुनाव रद्द कर दिया गया। शहर के गैर जाट वकील कहने लगे कि चौ. लालचन्द को अब फिर नीम के नीचे बैठकर मुवक्किलों से सिर खपच्ची करनी पड़ेगी जहां पहले करते थे, लेकिन चौ. छोटूराम ने केस डाला, तभी भरतपुर के राजा श्रीकृष्णसिंह से बात कर ली थी कि यदि चौ.लालचन्द केस हार गए तो आप उन्हें अपनी रियासत में वित्तमन्त्री ले

लेते। राजा कृष्णसिंह ने इसे सहर्ष यह स्वीकार कर लिया था। अब राजा चौ. लालचन्द को तुरंत अपनी रियासत में बुला कर राजस्व मंत्री नियुक्त कर आपने वहां अनेक वर्षों तक राज्य की सेवा की। एक समय आपको महसूस हुआ अब ठीक से कार्य नहीं हो पा रहा। आयु के अनुसार सुस्ति रहते महाराजा को वित्त मंत्री पद से त्याग पत्र देना चाहा लेकिन राजा ने स्वीकृति नहीं दी। चौ. लालचन्दने कुछ दिन सावधानी से काम किया तथा राज्य की 800 बीघा जमीन व बाग राजा के नाम नहीं थी तहसीलदार बुलाकर राजा के नाम कानून के तहत यह काम जरूरी था तथा लटका हुआ था ठीक करवा दिया। अब फिर चौ. लालचन्द ने लिखित राजा को अपना त्यागपत्र सौंप दिया, लेकिन राजा ने स्वीकार नहीं किया चौ. लालचन्द ने महाराज से कहा कि आप चौ. छोटूराम को बुलाकर मेरा कार्य उन्हें सौंप दें और मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लें। महाराजा ने चौ. छोटूराम को कहा कि आप भरतपुर में आकर मंत्री पद ग्रहण कर लें तथा अपनी शर्तें लिखकर इन्हें सभी शर्तें हमें स्वीकार होंगी लेकिन चौ. छोटूराम ने राजा को संदेश भिजवाया तो फिर उन्होंने कहा कि मैं पंजाब छोड़कर आपके पास आने में असमर्थ हूं। मेरे पंजाब में कुछ लक्ष्य हैं। जो मैंने पूर्ण करने हैं। वे पंजाब में मंत्री रहते ही पूर्ण हो सकते हैं जो कि बहुत जरूरी है। चौ. लालचन्द त्यागपत्र पर अड़ गए। राजा को न चाहते हुए भी उनका त्यागपत्र स्वीकार करना पड़ा। अन्य सभी अफवाहें राजनैतिक रूप से फैली है जो गलत थी। आज भी भरतपुर राज परिवार में और चौ. लालचन्द के परिवार में आना जाना है।

डीएलएफ कंपनी बनाई

चौ. लालचन्द के सुपुत्र चौ. रघुवेन्द्र ने दिल्ली लैंड एंड फाइनेंस कम्पनी (डी.एल.एफ.) बनाई। भूमि खरीदकर कालोनियां विकसित की। पहली कालोनी रोहतक में डी. एल. एफ. कालोनी बसाई 160 प्रतिशत दिल्ली तथा 80 प्रतिशत गुड़गांव डीएलएफ ने ही बसाया है। इसी से चौ. लालचन्द का परिवार धनवान बना।

गांव में सड़क बनवाई :– चौ. साहब ने सोचा गांव में सड़क बननी चाहिए। युक्ति सूझी कि क्यों नहीं वायसराय साहब को गांव के घर पर खाने के लिए बुलाया जाए। वायसराय के आने से पहले ही सड़क बनकर तैयार हो गई। वे गांव में एशिया का बड़ा अस्पताल बनवाना चाहते थे, लेकिन गांव के लोग कुछ गलत फहमियों में फंसे थे। उन्होंने सहयोग नहीं दिया और जमीन देने से मना कर दिया।

चौ. लालचन्द के बारे में अफवाहें निराधार

कई अफवाहें चौ. लालचन्द के बारे में चली हुई है लेकिन कहीं उनका उल्लेख नहीं मिलता। उनके साथ काम करने वाले व्यक्तियों तथा अन्य बुजुर्गों ने भी सभी अफवाहों को नकारा है फिर भी प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेषताएं तथा कुछ कमियां आदि जो हो सकना संभव होता है लेकिन चौ. लालचन्द एक विवेकशील, बुद्धिमान, ईमानदार हवा के व्यक्ति थे। संतोषी और सरल स्वभाव के भी थे। बड़े हंसमुख व ठल्लेमार व्यक्ति थे। रूप से लेकिन आप समाज में संघर्षशील नहीं थे। साधारण जनता में उनका घुलना–मिलना नहीं था। उनके संबंध ऊँचे लोगों से थे, लेकिन जन साधारण का बुरा भी नहीं करते थे। बल्कि लोगों की भलाई के लिए अंग्रेजों से भी अड़ जाते थे। इसलिए अंग्रेज भी उनका लोहा मानते थे। चौ. लालचन्द की अत्येष्टि पर भरतपुर से महाराजा बिजेंद्रसिंह तथा श्री बच्चूसिंह आये थे। ये चौ. छोटूराम की बरसी पर भी अनेक बार आये हैं। इन्होंने सभी अफवाहों को नकारा है। चौ. लालचन्द के बाद भरतपुर के खजाना मंत्री खाण्डा खेड़ी के चौ. सूरजमल बने थे। उन्होंने भी चौ. लालचन्द को बेलाग बताया है। कहा कि राजनीति की उठा–पठक में उन्हें बदनाम किया गया है।

जब भरतपुर के राजा जाट स्कूल के उत्सव पर आते थे तो खाना चौ. लाल के यहां ही हमेशा खाते थे। यदि उनके प्रति कोई दुर्भावना होती तो वे सभी के रोहतक निर्माताओं को छोड़कर चौ. लालचन्द के यहां खाना खाने क्यों जाते ? आपके दादा जमनादास क्षेत्र के प्रसिद्ध संत थे। उन्होंने गांव के ब्राह्मणों को 300 बीघा जमीन दी थी। आपके छोटे भाई तहसीलदार भरत सिंह तथा बड़े भाई चौ. रामस्वरूप इलाके में बड़े प्रसिद्ध और ईमानदार व्यक्ति समझे जाते हैं। ऐसे परिवार में जन्म लेकर तीसरे पोते थे चौ. लालचन्द कैसे कोई गलत कार्य कर सकते हैं। हम उन्हें स्मरण कर नतमस्तक।

चौ. रघवेन्द्रसिंह

चौ. लालचन्द के बड़े सुपुत्र चौ. रघवेन्द्रसिंह ने चौ. लालचन्द के बाद डीएलएफ का कार्यभार संभाला। आज यह कम्पनी देश की बड़ी कम्पनियों में गिनी जाती है। चौ. रघवेन्द्र के दो बेटी हुई बड़ी इंदिरा इलाहाबाद के कुशलपाल सिंह (के.पी.सिंह) से ब्याही आज कुशलपाल सिंह डी.एल.एफ. के सी.एम.डी है।

चौ.लालचन्द के दूसरे सुपुत्र शमशेरसिंह संयुक्त पंजाब के आई.जी. इंस्पेक्ट जरनल पुलिस रहे हैं। आप बड़े कर्मठ व ईमानदार पुलिस अधिकारी थे। सेवामुक्ति में भी आपने साधुओं के समान जीवन व्यतीत किया। आप एक आदर्श पुरुष थे तीसरे पुत्र श्री देवेन्द्रसिंह एक जाने माने उद्योगपति रहे हैं। आपने राजपुरा (पंजाब) कई सौ एकड़ में इंडिया केवल लिमिटेड (आई.सी.एल.) उद्योग स्थापित किया। जीन्द के किला जफरगढ़ (खुड़ाली) में भी 200 एकड़ में आई. सी. एल. स्थापित की तथा रोहतक के गांव खेड़ी साथ में 80 एकड़ में हरियाणा टेलिकॉम उद्योग स्थापित किया।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल : महान क्रांतिकारी और अमर शहीद

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जियालों में पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का नाम अत्यंत सम्मान और गौरव के साथ लिया जाता है। वे केवल एक निर्भीक क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि उच्चकोटि के लेखक, निबंधकार, कवि और उर्दू के प्रसिद्ध शायर भी थे। उनका संपूर्ण जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता, त्याग, साहस और राष्ट्रप्रेम का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने अपने विचारों और कर्मों से देश के युवाओं में स्वतंत्रता की अलख जगाई और अंततः राष्ट्र के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम पंडित मुरलीधर तथा माता का नाम मूलमती था। बचपन से ही वे तेजस्वी, स्वाभिमानी और साहसी स्वभाव के थे। उन्होंने हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन किया और साहित्य तथा कविता के प्रति विशेष रुचि विकसित की।

वे उर्दू जबान के एक प्रसिद्ध शायर थे और "बिस्मिल" के तख़ल्लुस से अपनी रचनाएँ लिखा करते थे। उनकी साहित्यिक प्रतिभा असाधारण थी। उनकी कुल 11 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिन्हें ब्रिटिश शासन ने परतंत्रता के उस दौर में जब्त कर लिया था। उनकी लेखनी में देशभक्ति, आत्मबल और स्वतंत्रता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

युवावस्था में स्वामी सोमदेव तथा आर्य समाज के विचारों का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन विचारों से प्रेरित होकर उनके मन में देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने की तीव्र इच्छा जागृत हुई। उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता को बना लिया और साहित्य तथा लेखन को भी जनजागरण का माध्यम बनाया।

उनकी कविताएँ और लेख युवाओं में राष्ट्रप्रेम और बलिदान की भावना का संचार करते थे। वे मानते थे कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न है।

सन् 1916 से राम प्रसाद बिस्मिल ने सक्रिय रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना आरम्भ किया। वे शचीन्द्रनाथ सान्याल तथा अन्य साथियों के साथ मिलकर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के प्रमुख नेताओं में शामिल हुए। इस संगठन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को समाप्त कर भारत में स्वतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करना था।

सन् 1921 के कांग्रेस अधिवेशन में हसरत मोहानी की अध्यक्षता वाली समिति ने पूर्ण स्वराज्य का उद्घोष करने का प्रयास किया। बाद में देशबंधु चितरंजन दास के नेतृत्व में क्रांतिकारी विचारधारा को संगठित स्वरूप मिला और हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की नींव मजबूत हुई। इस संगठन से भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, अशफाकुल्लाह खाँ, सुखदेव, राजगुरु तथा अनेक क्रांतिकारी युवा जुड़े, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

बिस्मिल एक कुशल संगठनकर्ता थे। उन्होंने अनेक युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा और उनमें देश के लिए बलिदान की भावना उत्पन्न की।

राम प्रसाद बिस्मिल का नाम मैनपुरी षड्यंत्र और काकोरी कांड जैसी ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा हुआ है। 9 अगस्त 1925 को उनके नेतृत्व में प्रसिद्ध काकोरी कांड को अंजाम दिया गया। इस योजना का उद्देश्य अंग्रेजी सरकार के खजाने से धन प्राप्त कर क्रांतिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाना था।

काकोरी स्टेशन के निकट सरकारी धन ले जा रही ट्रेन को रोककर क्रांतिकारियों ने खजाना अपने कब्जे में ले लिया। इस घटना ने अंग्रेजी शासन की नींव को हिला दिया और पूरे देश में क्रांतिकारी चेतना का संचार हुआ। इसके बाद अंग्रेज सरकार ने व्यापक स्तर पर जाँच शुरू की और अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया।

मैनपुरी कांड और काकोरी कांड का आरोपी बनाते हुए अंग्रेज सरकार ने राम प्रसाद बिस्मिल सहित अनेक क्रांतिकारियों पर मुकदमा चलाया। लखनऊ में चले ऐतिहासिक मुकदमे के बाद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकुल्लाह ख़ाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई।

19 दिसम्बर 1927 को मात्र 30 वर्ष की आयु में गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई। उन्होंने हँसते–हँसते मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। उनका यह सर्वोच्च त्याग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

राम प्रसाद बिस्मिल एक महान क्रांतिकारी होने के साथ–साथ उच्चकोटि के साहित्यकार भी थे। उनकी रचनाओं में देशभक्ति, आत्मबल और स्वतंत्रता की भावना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनकी कविताएँ युवाओं में उत्साह और राष्ट्रप्रेम का संचार करती हैं।

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" जैसी अमर पंक्तियाँ आज भी देशवासियों के हृदय में देशभक्ति की

"समय और शिक्षा का सही उपयोग ही व्यक्ति को सफल बनाता है।"

भावना को जागृत करती हैं। उनकी लेखनी ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान की और साहित्य को राष्ट्रसेवा का माध्यम बनाया।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का जीवन हमें सिखाता है कि देश और समाज के लिए समर्पण, साहस और त्याग का कितना महत्व है। उन शहीदों की कुर्बानियों से मिली हमारी आजाद साँसों का तकाजा और जिम्मेदारी यह है कि हम अपने वतन–ए–अजीज की विशालता, उसकी गंगा–जमुनी तहजीब और सर्वधर्म समभाव की रक्षा के लिए सदैव समर्पित रहें।

उनका जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है और हमें राष्ट्रीय एकता, भाईचारे तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का संदेश देता है।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर नायक थे। उन्होंने अपने अदम्य साहस, त्याग और देशभक्ति से राष्ट्र की सेवा की और स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। उनका जीवन और बलिदान आने वाली पीढ़ियों को सदैव राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और देश के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता रहेगा।

उनकी यह पंक्ति आज भी हमें आत्ममंथन और राष्ट्रीय एकता का संदेश देती हैः–

"बिस्मिल तुम्हारे मुल्क का अब ऐसा हाल है,
अशफ़ाक और भगत हैं अलग बेड़ियों में कैद।"

लेखक सदैव इस महान क्रांतिकारी, साहित्यकार और अमर शहीद को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते रहेंगे।

दहता जटवाड़ा

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

एक जनवाणी मुझे काफी पीड़ा दे रही है,

- सुत्ते जाट, बिखरे जाट ! जटवाड़े के बारा बाट।
- मुर्यल के डाबे से जाट मर्यादा पर प्रश्न उठाते संवेदनशील स्वर सुनने को मिलते हैं।
- क्यों लिबासपुर के दादा उदमीराम और दादी रत्नी जाट मर्यादा हेतु नग्नावस्था में 15 दिन पेड़ पर लटके रहे और अन्तिम सांस तक यही मुखरित होता रहा, श्हम जाट मर्यादा हेतु बलिदानी?
- क्यों आगरा में वीर गोकुला के रक्त से सिंचित वीर वसुंधरा से शहीदों की पौध अंकुरित नहीं हो रही?
- क्यों बल्लभगढ़ नरेश नाहरसिंह के बलिदानी स्वर– 'यह दीपक बुझ न पाये' अनसुने हो गये हैं?
- क्यों खटकड़ कला के इंकलाबी भगतसिंह की ज्वाला राख हो गई है?
- क्यों किसान मसीहा छोटूराम की जन्मस्थली गढ़ी सांपला में सन्नाटा है?
- क्या अभी किसान आन्दोलन में 750 शहीदों को भूल गये है?

प्रश्न पर प्रश्न जुड़ते जा रहे है, पर जाट समुदाय की वर्तमान त्रासदी है कि सम्पूर्ण कौम अपने वजूद के प्रति असंवेदनशील हो गई है। इसलिये इस लेख का शीर्षक बना है दहता जटवाड़ा। जड़ (इतिहास), जमीन (किसान), जमीर (जाट मर्यादा) नस–नस में समाई जाटों की धरोहर पर जो प्रहार होने लग रहे हैं, उन्हें हमें धैर्य और एकजुट होकर नगण्य करने होंगे। हस्तिनापुर हो या खाण्डवप्रस्थ (इन्द्रप्रस्थ) यह, जटवाड़े का इतिहास था। अस्मिता का जागरण है दिल्ली। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् के आरम्भ का दिन है। यह दिन विश्व के सबसे पहले गणराज्य का स्थापना दिवस होने के साथ–साथ सृष्टि के आरम्भ होने का भी दिन है। अब से 2083 वर्ष पहले शकों को परास्त कर मालव गणराज्य की जो अविस्मरणीय जीत हुई, उसे राष्ट्रीय गौरव का विषय माना जाता है। पूरा भारत आज भी इस दिन को पूरे उत्साह के साथ उत्सव के रूप में मनाता है। विक्रम संवत की स्थापना महाराजा विक्रमादित्य ने की थी, जो पवार गोत्र के जाट थे।

हमारा राष्ट्रीय पंचांग वर्ष 1957 में स्वीकृत हुआ। दुर्भाग्यवश शक संवत् को राष्ट्रीय पहचान के लिए चुना गया। क्या यह दुःख का विषय नहीं है कि सब लोग जिस तिथि पत्र के अनुसार सारे तीज–त्योहार मनाते हैं, मुहूर्त निकालते हैं, लोक कला और लोक संस्कृति से जुड़ते हैं, वह महान विक्रम संवत स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय पंचांग का हिस्सा नहीं है। तुच्छ मानसिकता ने हमसे अमूल्य संस्कार छीन लिए उसने हमारा संवत् ही नहीं छीना, वह सबकुछ छीन लिया जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। तुच्छ मानसिकता तो यही थी कि महाराजा विक्रमादित्य को इतिहास से गायब कर दिया जाये। तथा जाटों की लोकचेतना न जाने कब टूटकर बिखरती गई और हम अनभिज्ञ होकर यह सबकुछ सहते आ रहे हैं। वह महान सम्राट विक्रमादित्य ने अपनी सभा के विद्वानों (नवरत्न) की सहायता से जिस संवत कालगणना का वटवृक्ष तैयार किया, उसे उनकी लंबी वंश परंपरा ने सींचा। उनकी छाया में हल जोतते हुए किसान, श्रमिक, व्यापारी, श्रेष्ठ समाज, विप्र समुदाय, योद्धा, चिकित्सक और विद्या क्षेत्र में अपनी फसल उगाने वाले महारथियों ने नए–नए कीर्तिमान रखे। हमें भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग मिला, जिस पर आज भी हमें गर्व है। महाराजा विक्रमादित्य जैसा पराक्रमी, बुद्धिमान एवं लोकप्रिय गणराज्य शासक आज तक सम्पूर्ण इतिहास में एकमात्र विश्व सम्राट हुआ है।

फिर प्रश्न करने पर मैं विवश हूँ कि सम्राट विक्रमादित्य को इतिहास से गायब करने तथा भारतीय संस्कृति के वटवृक्ष वाले विक्रम संवत से हमें अनभिज्ञ रखने का पाप किसने किया? यह जाट मर्यादा पर कील ठोक दी है और आप इस पर मंथन भी नहीं करते, तो जाट जाति गर्त में तो जायेगी ही।

जगत की उत्पत्ति, पालन एवं लय तीन व्यवस्थाएँ जिस शक्ति के अधीन संपादित होती हैं, वह है प्रकृति। प्रकृति और परमेश्वर दो नहीं हैं, तत्वतः एक ही हैं। जाट कौम का गहरा लगाव है वसुंधरा से, और वह इसी कारण उत्पादक का दायित्व संभाले हुए है।

मैंने अपने बुजुर्गों को सवेरे उठकर सबसे पहले धरती माँ छूते, उसका नमन करते देखा है और यह भी देखा है कि जब हाली खेत की ओर सुबह–सुबह दो गऊ के जायो (बैलों) के साथ प्रस्थान करता है तो वह वंदना करता है– "धरती माँ तू बड़ी, तेरे बड़े भगवान", इसलिए उसकी आस्था प्रकृति में है। हाली उत्पादक के रूप में अपने दूसरे परिवार के सदस्यों को कृषि श्रमिक के रूप में सहयोगी बनाता है और एक शक्तिशाली समाज का गठन करता है। कुछ लोग इससे नहीं जुड़ पाते पर उन निठल्लों को भी भोजन उपलब्ध कराता है।

कालान्तर में इन निठल्लों ने परिवार को तोड़ने की शरारत शुरू कर दी – प्रकृति के विरुद्ध एक भयावह षड्यंत्र। और इन षड्यंत्रकारियों ने बौद्धों व चार्वाकों का वध भी किया और खदेड़ा, और समाज को ऊंच–नीच में बांटकर रूढ़िवादी व्यवस्था बना दी जिससे भारतीय अमूल्य संस्कृति पर आंच आई और जाट समाज भी इस षड्यंत्र का शिकार हुआ। बाह्य शक्तियों के प्रहार भारत पर होने लगे, धर्मान्ध समाज का जन्म मानव कल्याण के लिए घातक बन गया।

देश में भक्ति काल का उदय हुआ सिख सम्प्रदाय बना और जाटों का कुछ भाग इससे जुड़ गया, उनकी रूढ़िवादी परम्पराओं से निजात मिली और विवाह–शादियाँ व अन्य सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यक्रम अपने ही ढंग से पंजाबी भाषा में होने लगे। उन्नीसवीं सदी के अन्त में समाज सुधारक स्वामी दयानन्द का आगमन हुआ। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की तथा उन्होंने धर्मान्ध परम्पराओं को नकारा और सम्पूर्ण जाटलैंड में आर्यसमाज विचारधारा बलवती हो गई। हम इस क्षेत्र में पुनर्जागरण का युग मानते हैं।

आज के सन्दर्भ में आर्थिक विकास और राजनीतिक परिपक्वता जाट कौम के लिए दो ज्वलंत मुद्दे हैं। बीसवीं सदी में जाट समुदाय से दो महान विभूतियाँ चौ० छोटूराम व चौ० चरणसिंह राजनीतिक मंच पर सक्रिय हुईं। दोनों को अर्थशास्त्र का ज्ञान था तथा किसानों की पीड़ा का गहरा अनुभव था। उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन कांग्रेस पार्टी से आरम्भ किया।

चौ० छोटूराम का क्रांतिदर्शन मुख्यतः ग्रामीणों के उन्नयन, विकास एवं शोषित वर्ग को शोषणमुक्त करना था। वे कांग्रेस में 1915 में आये तथा उन्होंने 1920 में इस पार्टी को छोड़ दिया क्योंकि उनकी विचारधारा तथा कांग्रेस विचारधारा में काफी अन्तर था। चौ० छोटूराम का पूरा जीवन निर्वाध चेतना प्रवाह की ऐसी अंतकथा है जो अवरोधों को समेटती हुई अनवरत ग्रामीण विकासोन्मुखी रही। उनके जीवन का एक चुनौती भरा लक्ष्य था शोषित ग्रामीण समाज को लोकतंत्र के माध्यम से रास्ता दिलाना। उन्होंने इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु आंधियों को ललकारा, डिगे नहीं, झुके नहीं, अकेले पड़ गए पर अविचलित रहे, क्योंकि उनमें वैचारिक गहनता, स्पष्टता और तटस्थता थी। अपने क्रांतिकारी कार्यों से वे किसान मसीहा बने एवं एक महान राजनीतिज्ञ ।

किसानों के स्वतंत्र भारत के भीष्म पितामह चौ० चरणसिंह गांधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक कांग्रेस में सर्वप्रथम ही रहे। उन्होंने चरित्र की राजनीति की व भ्रष्टता का अवलम्ब कभी नहीं किया। उनका जीवन इस दृष्टि से अपने आप में आदर्श राजनीतिक मूल्यों की संस्थापना करता है। जब कांग्रेस की राजनीति गांधीवाद से विमुक्त होती जा रही थी, तो उन्होंने 1960 के दशक में कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। वे मुख्यमंत्री रहे और प्रधानमंत्री भी। वे स्वतंत्र भारत के ऐसे ग्रामीण लोकतंत्र परिवेश की महालोकशक्ति थे, जिसकी सभी लोकतंत्र राजनीतिक पार्टियों में प्रतिष्ठा आज भी बनी हुई है।

उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इतना महान् है कि उनके संबंध में संपूर्ण विवरण देना थोड़ा सा कठिन कार्य हो जाता है। निःसन्देह वे आधुनिक इतिहास की महान विभूति हैं और वे असली भारत यानी गाँवों के सच्चे, सजग एवं प्रभावी प्रतिनिधि थे। उनके चले जाने के बाद असली भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई राजनीतिज्ञ नहीं है। वर्तमान ग्रामीण परिवेश से उभरे राजनेताओं में न तो प्रतिभा है और न ही नैतिक बल, अतएव गाँवों की अनदेखी हो रही है एवं कृषि व्यवसाय संकट में है। मुझे नहीं दिखाई देता कि ग्रामीणों का संरक्षक बनकर कोई राजनीतिक शक्ति भविष्य में उभरेगी। देश के किसानों को आर्थिक स्वतंत्रता मिले, यह महज एक स्वप्न बन गया है शहरी वर्चस्व एवं ग्रामीण की उपेक्षा एक हकीकत बन गई है।

कुछ समय पहले मैंने एक लेख "इब दिल्ली म्हारी कोन्या" लिखा था, कदाचित आपने इसको गम्भीरता से नहीं लिया। क्या वाकई "इब दिल्ली म्हारी कोन्या"? क्यों खो दी आपने अपनी पुश्तैनी विरासत ? क्या सचमुच में हमारी दिल्ली ढह गई? ढह गई, आप दिल्ली में अजनबी हैं, दूसरों का वर्चस्व है। और अब मैं और चेता रहा हूँ–जटवाड़ा भी ढहने वाला है।

जिनका स्वभाव अच्छा होता है। उन्हें कभी प्रभाव दिखाने की जरूरत नहीं पड़ती।।

सम्पूर्ण जाटलैंड में भारी शहरीकरण हो रहा है, यहाँ के गाँव उजाड़े जा रहे हैं। गगनचुंबी इमारतें खड़ी हो गई हैं बाहरी लोग आकर भारी संख्या में बस गये हैं। आर्थिक संपन्नता से ही आज के युग में पहचान होती है। हमारे पास खेत थे गाँव के चौधरी थे, अब यह चौधराहट पैसे के पास चली गई है। मुनीरका, बिजवासन, पहाड़ी धीरज, दरियागंज, महिपालपुर, पालम और न जाने कितने गाँवों के चौधरी कहाँ खो गये नहीं मिलेंगे। 2027 की जनगणना के आंकड़े आने दो, सारी जाटलैंड की चौधर नदारद मिलेगी। राजनीति में तो हम हाशिये में आ गये हैं, सामाजिक स्तर पर हमारी जो हैसियत थी वह भी लुप्त हो जायेगी। मेरे चौधरियों, कभी–कभी मिल बैठकर विचार कर लिया करो – जाट इन्द्रप्रस्थ सभ्यता के पुरोधा हैं। सोचो अब कहाँ खड़े हैं जाटलैंड के अप्रवासी जाट– हकीकत से रूबरू हो जाओ।

डॉ. रणधीर सिंह (1934-2026)

(एक महान वैज्ञानिक, शिक्षाविद् एवं वैदिक विज्ञान के अन्वेषक)

– अजीत सिंह चौधरी, सचिव, सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था

डॉ. रणधीर सिंह का व्यक्तित्व आधुनिक विज्ञान और प्राचीन भारतीय अध्यात्म के दुर्लभ संगम का प्रतीक था। उनका जीवन केवल भौतिकी के समीकरणों तक सीमित नहीं था, बल्कि वे "श्रुति" (अंतर्मन के ज्ञान) और मानवता के सच्चे उपासक थे।

1. जन्म एवं प्रारंभिक पृष्ठभूमि

जन्म: उनका जन्म वर्ष 1934 में जनपद शामली के भैंसवाल ग्राम के एक किसान परिवार में हुआ था।

शिक्षा: उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से 1954 बी एससी और 1956 में एम.एससी. (फिजिक्स) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

2. अंतरराष्ट्रीय ख्याति एवं नैतिक सिद्धांत

विदेशी शिक्षा वर्ष 1960 में प्रतिष्ठित "वंडर वॉल फेलोशिप" प्राप्त कर वे अमेरिका की जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी (Baltimore) गए, जहाँ उन्होंने परमाणु भौतिकी (Nuclear Physics) में विशेषज्ञता हासिल की। नैतिक निर्णय अमेरिका में अपार संभावनाओं के बावजूद उन्होंने मातृभूमि की सेवा को चुना। उन्होंने भारत सरकार के परमाणु विभाग में कार्य करने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि वे "सामूहिक विनाश" (Mass Destruction) के शस्त्रों के निर्माण में भागीदार नहीं बनना चाहते थे। वे अक्सर अपने अमेरिकी गुरु और परमाणु बम के जनकों में से एक, वैज्ञानिक रोसेटी (Rosetti) का उल्लेख करते हुए कहते थे कि विनाश की शक्ति देखने के बाद वैज्ञानिक प्रायश्चित स्वरूप "लाइफ साइंस" की ओर मुड़ जाते हैं।

3. शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सफर

शिक्षण: 1957 में आर.के. (पी.जी.) कॉलेज, शामली में लेक्चरर के रूप में करियर शुरू किया और 1964 में विभागाध्यक्ष बने।

नेतृत्व: 1971 से अगले 24 वर्षों तक उन्होंने प्राचार्य के रूप में कॉलेज का कुशल नेतृत्व किया। सेवानिवृत्ति से पूर्व वे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के कार्यवाहक कुलपति के गौरवपूर्ण पद पर आसीन रहे।

4. सेवानिवृत्ति के पश्चात शोध एवं ऐतिहासिक खोज

सेवानिवृत्ति के बाद उनका कार्यक्षेत्र और अधिक विस्तृत हो गया। उन्होंने अपना जीवन वेद विज्ञान को डिकोड करने में समर्पित कर दिया।

इस्सोपुर टीला की खोज: वर्ष 2002 में उन्होंने अपने प्रिय शिष्य डॉ. उमर सैफ के साथ मिलकर इस्सोपुर टीला की खोज की। उनके प्रयासों से इस महाभारत कालीन शहर को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की सूची में स्थान मिला, जिस पर आज भी शोध जारी है।

वैदिक एवं खगोल विज्ञान: उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय ज्योतिष और बोधायन सूत्र का ज्ञान विश्व के प्राचीनतम विज्ञानों में से एक है। उन्होंने कुरान में ब्रह्मांड निर्माण और अंतरिक्ष विज्ञान पर काम किया तथा वेद व बाइबल के 7 दिनों के सिद्धांत की वैज्ञानिक व्याख्या की।

5. भविष्यद्रष्टा और दार्शनिक विचार

भविष्यवाणी: आज से 35 वर्ष पूर्व ही उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि विज्ञान जल्द ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) खोज लेगा, जिससे प्राचीन श्रुत्तियों को समझाना संभव होगा।

शिक्षा दर्शन: वे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट थे। उनका मानना था कि विद्यालयों में केवल प्रायोगिक ज्ञान (Empirical Knowledge) ही नहीं, बल्कि अंतर्मन की गहराइयों से प्राप्त "श्रुति" ज्ञान भी पढ़ाया जाना चाहिए।

जीवन दर्शन: वे वसुधैव कुटुंबकम के अनुयायी थे। उनके लिए मृत्यु अंत नहीं, बल्कि एक नया पड़ाव था। वे अक्सर कहते थे– "मृत्यु तो एक द्वार है, हम सब इस द्वार के पार मिलेंगे।"

6. महाप्रयाण

भारत माँ के इस सच्चे सपूत और एक महान गुरु–संत का निधन 18 फरवरी 2026 को हुआ। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक मशाल की तरह सदैव प्रज्वलित रहेगा।

गर आपके अंदर संतोष नहीं है। तो दुनिया की कोई भी चीज आपको खुश नहीं रख सकती।।

Two Revolutionary Canals

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

The construction of Suez and Panama canals in the years 1869 and 1914 virtually revolutionised the international maritime trade across the world. Suez Canal passed through the Sinai Peninsula of Egypt and provides a direct maritime or naval route between the Mediterranean sea and the red sea. Consequently, this artificial waterway reduced the shipping distance by 8500 km for ships coming from Europe to India, Burma and other countries on the east coast of Africa. Likewise, the Panama Canal across Panama reduced the shipping distance by 13000 km for ships coming from Asian countries like Japan and South Korea or from California side ports and some countries on the eastern coast of South America sailing towards west coast of America, Europe, west coast of Africa.. Obviously, these two artificial waterways greatly reduced the travel time and consumption of fuel and made the sea transport more efficient and economical and gave a big boost to the international trade. The details of the two canals are briefly described below.

I. Panama Canal:-

The 82 km long Panama Canal or the waterway provides a direct shipping link or conduit between the Pacific and Atlantic oceans. The idea of building a link waterway had been taxing the minds of seafarers/sailors for a long time. But the initial real breakthrough was achieved by French diplomat and entrepreneur Ferdinand de Lesspes. He had already built a high reputation for himself as builder after building a much longer Suez Canal in 1869. Therefore, he could arrange adequate financial, men and material resources to execute this project. His plan was for building a simple sea link like the Suez Canal. Accordingly, he started the project on first January 1881 by employing a labour force consisting.of.40,000 workers and engineers of France The Labour force was mostly employed from the West Indies.

But the actual execution of this project was not as simple as that of the Suez Canal because the Panama canal zone was part of the tropical forests. It became extremely difficult for the workers to work in this environment because of mosquitoes, flies and other arthropod bites. The frequent heavy rains further complicated the working conditions. Consequently, diseases like the malaria and yellow fever took a heavy toll on the work force as the medicines for these fatal infectious diseases had not been developed by then. The number of deaths up to 1889 was 22000. To cut long story short, Ferdinand abandoned the project in 1889 after suffering heavy losses and the project remained in abeyance till American President Roosevelt vigorously started taking interest in this abandoned project. After a lot of planning and discussions with best engineers of America, American companies started the project afresh. The design was changed to the system of lock chambers after securing owning rights over the canal zone from the Panama government after making a payment of 10 million dollars.

The construction work started in 1905. The workforce was again from West Indies. The labour force started facing similar problems like mosquito bites. But this time, proper in-situ medical facilities were provided. Also, a special campaign was launched to take protective covers against mosquito bites at night and use of chemical sprays to reduce the population of vectors and other insects. The fatality rate of workers reduced considerably. Even then, the total number of deaths during the entire project period was 5500 against 22000 in the first attempt. Finally, the canal project was completed in 1914. After initial trials, the first American Cargo-cum-passenger.ship SS Ancon passed through the Panama canal on 15th August 1914. The canal was then officially declared open for international commercial Trade. Grand opening ceremony was not organised because of the start of the 1st World War. However some contigent works and terminal facilities were completed by April 2016. This is how the large number of ships have been saved from the drudgery of passing through a dangerous zone at Cape of Horn at the southern tip of South America.

The number of ships passing through the Canal started increasing gradually.These days, on an average 40-45 vessels transit through the canal both ways constituting 5% of the global trade. The canal locks were expanded in 2016 to enable the larger ships to pass through. Modern tourist hot-spots like City of Knowledge, Atlantic Bridge, high -teck tourist galleries and special economic zones have been established. The end stations are Colon on the Caribbean side and modern Panama City on the Atlantic side. The management of the canal and the passage ships is in the hands of Panama Canal Authority. America controlled the Panama Canal till 1999.

2. Suez Canal

Suez Canal was built by a shipping company called Suez Ship Canal Company headed by diplomat and entrepreneur Ferdinand de Lesspes of France, the man who also made an abortive effort to build the Panama Canal in 1881. Ferdinand was ambassador to Egypt in the 1830s and developed good relations with the king Pasha of Egypt. Consequently, he secured the Concessionary rights from Pasha to build the Canal and took ten years to build it during 1859-69. The first ship passed through the canal on 17th November 1869. Since then, the canal has been serving the interests of Shipping Companies of Europe, Asia and America and fostering international trade with ease. Initially, Egyptian government had 44% shares in the shipping company but later had to sell the shares to the British government to tide over the financial crisis.

The Canal is 193.7 km long and cuts across the Sinai Peninsula of Egypt. It starts from Port Said in the west and ends at Port Twefic near Suez township. It also had strategic setbacks from time to time. Initially, the British government sent troops to East Africa in order to establish British hegemony over some of the east African countries. There was a big Suez Canal crisis in July 1956 when Egyptian President Gamal Abdel Nasser nationalised the Canal and took control from the England-French combine in order to meet the construction cost of the Aswan dam. As a result, Israel, England and France attacked Egypt in October 1956 but timely intervention by America and Russia saved the situation by compelling England & Co to withdraw their forces and give control to Egypt for all times to come. Presently, the

management of the Canal is administered by the Suez Canal Authority that takes care of all the maintenance and expansion expenditures. Again the Canal remained closed for 8 yrs after the 1967 Six Day War between Israel and Arabs. Presently, on an average, 70 ships transit the canal daily and handle 12% of the global trade.

Suez Canal connects the Mediterranean sea with the Red sea and reduces the shipping distance for ships coming from Europe to Asean countries by 8500 km. Before the completion of the canal, the ships had to sail along the entire west coast of Africa upto the Cape of Good Hope and then move towards the north- east direction to reach Bombay or Calcutta or Rangoon etc. So, the waterway of Suez Canal provided a big relief by reducing the travel time by at least 10 days if the ship sails at a speed of 30 miles or 27 knots per hour. Saving in fuel is also tremendous.

The construction of the canal started on 25th April 1859 by employing a labour force of 30000 Egyptians. The mortality rate was high due to diseases and the harsh climatic conditions of the desert. There was also big opposition from England as new passage would hurt the British interests as she feared French domination of naval routes. Initially, the canal was built in a single lane with one or two bypasses and ships moved in convoys. But a lot of upgrading was done with the passage of time by building more parallel canals (total length 89 kms) and 35 km multi- lane Ballah bypass with berthing facilities (in 2016 costing 9 billion dollars) to reduce the transit time and facilitate the passage of big size ships. Now Special Economic Zones and Industrial Parks have been built along the western bank to boost manufacturing, tourism and trade. The canal management is now in the hands of Suez Canal Authority.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc. and MA Economics from MCM DAV College for Women Chandigarh. Working as (CE) in Air India Chandigarh. Salary Rs. 13 LPA. Father's own business (Book Shop). Mother housewife. Own residence and own shop in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl 26/5'1" Master in Fashion Management from NIFT. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Ola, Lamba. Cont.: 9813309321
- SM4 Jat Girl (DOB 11.01.2002) 24/5'3" J.B.T. (first year). Deaf & Dump 100%. Father farmer. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Suhag, Lathwal. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Girl (DOB 24.12.96) 29/ 6 feet Master in Law (LLM) and hons. In BALLB fro Uttranchal University, Dehradun. Currendly practicing as Advocate in Punjab & Haryana High Court, Chandigarh. 65 acre agriculture land in village. Family residence at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Bhadu, Beniwal. Cont.: 9466535300
- SM4 Divorced Jat Girl 36/5'5" Employed as government Doctor, doing M.D. Reputed family. Preferred MBBS+MD or Class-I Officer. Cont.: 8901491517
- SM4 Jat Girl (DOB 28.10.98) 27/5'4" B.A. LLB (O. P. Jindal University). Profession Advocate. Working with International Law Firm. Salary Rs. 3 lac per month (36-40 LPA). Father Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Mother Senior Officer, General Manager in a Corporation of Haryana. Family settled at Panchkula. Preferred IAS/IPS/Judicial Officer or well established professional/Businessman from reputed family background. Avoid Gotras: Badhran, Goyat, Maan. Cont.: 9417203810
- SM4 Jat Girl (DOB 20.05.99) 27/5'5" BB.A. LLB, LLM from Kurukshetra. NET qualified. Practicing as Advocate in District Court Kurukshetra. Father farmer. Mother Housewife. Agriculture land 17 acre. Avoid Gotras: Bajwa, Dalal, Bal. Cont.: 9416172852
- SM4 Jat Girl (DOB 08.03.96) 30/5'4.5" BAMS, Pursuing MS OBS & Gynae.. Father retired as MWO from Indian Army. Brother Major (Doctor) in Indian Army. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Preferred Doctor/Class-I officer. Avoid Gotras: Barak, Gulia, Rathee. Cont.: 8329554190
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 28/5'5" M. A. English from Punjab University, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Private Company at Mohali. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother House wife. Preferred match Chandigarh/Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 27.08.2000) 25/5'4" M.Sc. Math., B.Ed. CET 2025 qualified. Father Sub Inspector in Haryana Roadways. Mother House wife. Avoid Gotras: Chahal, Sehrawat, Malik. Cont.: 9416674447
- SM4 Jat Girl (DOB 08.01.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed., Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. Six years experience with Edubridge International School Mumbai and Heritage International School Gurugram. Fatehr reteired from Government job, now engaged in Real Estate Business at Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lohchab. Cont.: 9868835193
- SM4 Jat Girl (DOB 01.11.98) 27 5'5" B.Com. M.Com (Psychology), B.Ed., CTET qualified. Working in government office in Chandigarh on contract basis. Father retired Under Secretary from Haryana Civil Secretariat. Mother housewife. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Hooda, Duhan. Cont.: 9417347896, 9878687264
- SM4 Jat Girl (DOB 20.12.96) 29 5'4" M.S. (Surgery). College topper from Pitanjali Ayurvedic Medical College Haridwar. B.A.M.S fro Shri Krishna AYUSH University Kurukshetra. Working as Assistant Professor at COER University Roorkee (Uttrakhand). Father S.I. PS Barwala, Hisar. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jakhar, Sihag, Nain. Cont.: 8307986833
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.2003) 22/5'8" Education 12th. Working in Taj Hotel Sector 17 Chandigarh. 2.5 acre agriculture land. 4 marla Koti in Chandigarh. Father's self work. Mother housewife. Family settled at Raipur Khurd (Chandigarh). Avod Gotras: Beniwal. Cont.: 8699113516
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 35/ 6 feet. Graduate from Punjab University Chandigarh. Self Employed in Chandigarh (Book Shop). Income 15-20 lakh Per Annum. Own residence and won shop in Chandigarh. Father's own business (Book Shops). Mother housewife. Avod Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11.2000) 25/5'4" M. Pharma, MBA. Working as Junior Research Scientist in Mankind Pharma, Gurugram. Income Rs. 4.5 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938

- SM4 Jat Boy (DOB 27.06.2002) 24/5'5" B.Tech., MBA. Working as Assistant System Engineer in TCS, Banglore. Income Rs. 4 LPA. Father S.R. Director in MNC, Banglore. Mother housewife. Own house at Banglore, Hyderabad, Gurugram. Avoid Gotras: Thaken, Sangroha, Kadyan. Cont.: 9780683938
- SM4 Jat Boy (DOB 07.04.96) 30/5'8" Ph.D. (Pursuing). Business University of the Camberlands (USA). MBA topper School of Business Camegie Mellon University USA. B. Tech. (CSE) Jaypee University of Information Technology Solan, India. Profession: Accelerated Leadership Program (Marketing Manager) Pro-Active USA, Product Manager: Edge AI Remote. Avoid Gotras: Nara, Dangi. Cont.: 9416950002
- SM4 Jat Boy (DOB 09.01.80) 36/5'7" B.E. in Electrical & Communication. MBA in General Management. Working as Associate Director, Management Consulting Company- ForvisMazars. Income RS. 35.5 lakh per year. Father retired Doctor. Mother retired Teacher. Own house in Panchkula, Banglore. Avoid Gotras: Phogat, Lamba, Ahlawat. Cont.: 9900107055
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 30/5'9" B.E. in Mechanical Engineering. Working as SR Associate Digital Marketing in reputed MNC at Bombay. Income Rs. 8.5 lac per year & free lancing business. Father retired from PGI. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan, Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B.A., MA, D.Pharmacy. Job: Pharmacy Shop. Three acre agriculture land. One plot in Rohtak. Avoid Gotras: Phogat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.98) 27/ 6 feet. B. A., MA from MDU Rohtak. Working in IDFC First Bank Private Ltd. at Gohana (Sonepat). Fathr expired. Mother Government job pensioner. Avoid Gotras: Gill, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9812919970
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 27/5'7" Post Graduate in Psychology. Serving in Indian Navy at Mumbai. Salary Rs. One lakh PM. Father businessman. Mother housewife. Family settled at Panipat (Haryana). Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 09.11.98) 27/ 6 feet. MA, History. Employed as Clerk in Haryana Government on regular basis. Avoid Gotras: Pattar, Gill, Nehra. Cont.: 8264141578
- SM4 Jat Boy (DOB 14.10.98) 27/5'9" B.Sc. Medical, B.Ed. (Biological Science). CTET, HTET cleared. Employed in Chandigarh Police. Father's self car sale, purchase business. Family settled at Ganaur (Sonepat). Avoid Gotras: Chhikara, Deswal, Malik. Cont.: 9518002197, 8813970974
- SM4 Jat Boy (DOB 11.01. 2003) 23/5'9" B.A., B.Ed., M.Sc. in Geography. Father farmer. Mother housewife. 5.6 acre agriculture land. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Dabas. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 03.08.99) 26/6 feet B.A. History Hons., SGTB Khalsa College, LLB from Faculty of Law, DU., LLM, Geeta University, Panupat, Private International Law, Hague Academy, International Court of Justice. Advocate in Punjab & Haryana High Court, Chandigarh. Father's own business of Real Estate. Mother housewife. Eight acre agriculture land, rental income. Avoid Gotras: Mali, Khatri, Phour. Cont.: 9466095995, 9416640442
- SM4 Jat Boy (DOB 10.10.97) 28/170 CM. B.A. Working as Deputy Accounts Manager in Aditya Birla Group. Avoid Gotras: Darall, Solanki, Dahiya. Cont.: 9467386368
- SM4 Jat Boy (DOB 05.12.91) 34/6'1" B. Tech. Electrical. LLB Hons. Practicing as Advocate in District Court Rohtak. Father Pharmacy Officer Retired. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Sangwan. Cont.: 9416517438, 9466126438
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.99) 27/5'7" B.A. LLB. Practicing as Advocate in Rohini Court Delhi. Father Businessman. Mother Senior Nursing Officer in Ambedkar Government Hospital Rohini Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Rathee, Sangroha. Cont.: 9560344388
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 28/6 feet. B. Tech. Computer Science. MBA. Working as Software Engineer in Rocket Software Pune. Permanent work from home. Package Rs. 25 LPA. Father retired Supervisor from HMT Pinjore. Mother housewife. Own Coaching Institute--Banakura Classes. Agriculture land 4.5 acre. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.96) 29/5'7" Employed as Excise Inspector GST Department Ujjain (Bhopal Zone) M.P. Father in private sector. Mother housewife. Preferred Government job in Madhya Pradesh/Chhatisgarh. Avoid Gotras: Kandola, Nain, Dalal. Cont.: 9416339570
- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Whu Otto Beisheim College Germany. Working as Equality Analyst in Kanou Capital New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Father retired from Army, now Clerk in Oriental Bank of Commerce. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Cont.: 8708370617, 9416823236
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Cont.: 9068574655

उम्र का पैमाना

क्या इंसानों को परखना चाहिए 'उम्र' के पैमाने से,
जिसने बाँट दिया हम सब को अद्भुत सी श्रेणी में,
और पिरो दिया, बचपन-जवानी और बुढ़ापे की
त्रिवेणी में,

उम्र तो फकत वहम है, ज़हन की सोच का,
ये नहीं है मापदंड, कमज़ोरी की सोच का,
उम्रदराज़ी दुर्बलता की नहीं बन सकती है सूचक ,
ये तो तजुर्बों की रईसी का, है एक सच्चा द्योतक ,

उम्र को सिर्फ गिनती के तराजू में मत तोलो,
फक्र करो अपनी उम्र पर, और सभी को बोलो,
उम्र तो पन्नों की एक ऐसी नायाब किताब है,
जिसके हर पन्ने पर अनेकों तजुर्बों का हिसाब है।

अब हमारी झुर्रियाँ बयां करती हैं दास्तान-ए-सफर,
हर लकीर में बसा है तजुर्बे का 'आभास-ओ-असर',
गौर से देखो तो उम्र में छुपा है इस जीवन का सार,
तमन्ना बस यही है, मिलता रहे आप सबका प्यार।
मिलता रहे बस आप सबका प्यार।।

....सुखदीप सांगवान

कभी भी इंसान, अपनी मर्जी से नहीं बदलता। सामने वाले का व्यवहार और विचार उन्हें मजबूर कर देता है।।

हमें जिन पर गर्व है

एशियन गेम्स 2026 के लिए चुनी गई भारतीय महिला कुश्ती टीम की सभी 6 पहलवान हरियाणा की बेटियाँ है।

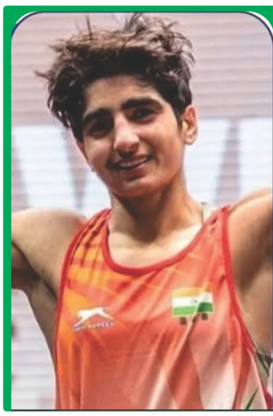

हरियाणा के ऑटो ड्राइवर की बेटी का विदेश में डंका रोहतक की मीनाक्षी हुड्डा लगातार दूसरी बार बनीं विश्व की नंबर–1 बॉक्सर

हरियाणा के ये सभी 18 पहलवान 19 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2026 तक ऐची–नागोया (जापान) में होने वाले एशियन गेम्स 2026 में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

उपरोक्त सभी की उम्मदा उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ0 छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त कार्यकारिणी तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

हार मानना आसान है, लेकिन कोशिश करते रहना। यही असली जीत है।।

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।